ड़-लमाए दा'वते इस्लामी की बहारें (हिस्सए अव्वल)

Faizane Amire Ahle Sunnat (Hindi)

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

मअ़

26 ईमान अफ़रोज़ हिकायात

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी 14
रुक्ने शूरा बन गए 32
मद्र-सतुल मदीना का मुदर्रिस आलिम कैसे बना ? 43
कहां से कहां जा पहुंचा ! 44
विडियो गेम्ज़ के शौक़ीन की तौबा 61
सआदतों की मे'राज की दास्तान 66
खैलों का शौक़ीन मुदर्रिस बन गया 79
सारा घराना अ़त्तारी हो गया 83

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए इस्लाही कुतुब

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79- 25391168 E-mail: maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net
मक-त-बतुल मदीना

उ-लमाए दा'वते इस्लामी की बहारें (हि़स्सए अव्वल)

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

मअ़

26 ईमान अफ़रोज़ हि़कायात

: पेशकश :

मजलिसे अल मदी–नतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

नाम किताब : **फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

पेशकश : शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम 1431 हि., ओक्टोबर सि. 2009 ई.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना** (अह़मदआबाद)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 18 मुह़र्रमुल ह़राम 1429 ह़वाला : 151

الحمدللّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علیٰ سید المرسلین

وعلی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ**''**

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

28-01-08

E.mail:ilmia26@yahoo.comwww.dawateislami. net

ph : (079) 25391168

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
(1)दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	4	(17) वीडियो गेम्ज़ के शौक़ीन की तौबा	61
(2)फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ	4	(18) कराटे का माहिर, आ़लिम कैसे बना ?	64
(3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी	14	(19) सआ़दतों की मे'राज की दास्तान	66
(4) अमीरे अहले सुन्नत के पुर तासीर बयान ने आ़लिम बनने का जज़्बा दिया	19	(20) बचपन ही से म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया	76
(5) कॉलिज का स्टूडन्ट मुफ़्ती कैसे बना ?	23	(21) बुरे अ़क़ाइद से तौबा कर ली	77
(6) मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) पढ़ाने वाला मुफ़्ती कैसे बना ?	26	(22) खेलों का शौक़ीन, मुदर्रिस बन गया	79
(7) म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया	28	(23) अव्वल पोज़ीशन ह़ासिल की	81
(8) रुक्ने शूरा बन गए	32	(24) क्लीन शेव नौ जवान की तौबा	82
(9) ख़्वाबे ग़फ़लत से जगा दिया	34	(25) सारा घराना अ़त्तारी हो गया	83
(10) ख़ैर ख़्वाही की ब-र-कतें	39	(26) मॉर्डन नौ जवान आ़लिम कैसे बना ?	86
(11) फ़ैज़ाने सुन्नत पढ़ कर आ़लिम बनने का जज़्बा मिला	41	(27) सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया	92
(12) मद्र-सतुल मदीना का मुदर्रिस आ़लिम कैसे बना ?	43	(28) येह ए'तिकाफ़ क्या होता है!	93
(13) कहां से कहां जा पहुंचा !	44	(29)म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये	96
(14) बद मज़्हबों के चुंगल से छूट गए	54	(30)मैं फ़नकार था !	97
(15) फ़िल्म बीनी का शौक़ीन, आ़लिम कैसे बना ?	57	(31)रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	100
(16) अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने मेरा ईमान बरबाद होने से बचा लिया	59	(32)म-दनी मश्वरा	101

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूदे पाक की फज़ीलत

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**" के सफ़ह़ा 1 पर नक़्ल करते हैं : ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है, **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं : कौन **यौमे जुमा'रात** और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता हैं।

(کنز العمال ج۱ ص ۲۵۰ رقم ۲۱۷٤ دار الکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" आज 35 से ज़ाइद शो'बों में **सुन्नतों की ख़िदमत** कर रही है। म-सलन मसाजिद की ता'मीरात, (मुफ़्त) **हिफ़्ज़ो नाज़िरा**, बालिग़ान की ता'लीमे क़ुरआन,

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात, इस्लाह़ी कुतुब की फ़राहमी, रूह़ानी इ़लाज, जेलों में क़ैदियों की इस्लाह़, ह़ज व उ़मरा पर जाने वालों के लिये तरबिय्यती इज्तिमाआ़त का इन्ए़क़ाद, **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स), **मुफ़्ती कोर्स,** फ़तावा जात का इजराअ, नेकी की दा'वत सारी दुन्या में आ़म करने के लिये म-दनी क़ाफ़िलों की तरकीब, वग़ैरहा। इस **म-दनी तह़रीक** के म-दनी कामों का आग़ाज़ आज से तक़रीबन पच्चीस साल क़ब्ल सि. 1401 हि. ब मुत़ाबिक़ 1981 **ई.** में बाबुल मदीना कराची में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने चन्द रु-फ़क़ा के साथ किया। इस म-दनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने लाखों मुसलमानों बिल ख़ुसूस नौ जवान इस्लामी भाइयों और बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया, कई बिगड़े हुए नौ जवान तौबा कर के राहे रास्त पर आ गए, बे नमाज़ी न सिर्फ़ नमाज़ी बल्कि नमाज़ें पढ़ाने वाले (या'नी इमामे मस्जिद) बन गए, मां बाप से ना ज़ैबा रविय्या इख़्तियार करने वाले बा अदब हो गए, कुफ़्र के अंधेरों में भटकने वालों को नूरे इस्लाम नसीब हुवा, यूरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाहिश मन्द **का'बतुल मुशर्रफ़ा व गुम्बदे ख़ज़रा** की ज़ियारत के लिये **बे क़रार** रहने लगे, दुन्या के बे जा ग़मों में घुलने वाले फ़िक्रे आख़िरत की म-दनी सोच के ह़ामिल बन गए, फ़ोह़्श रसाइल व डाइजेस्ट के शाएक़ीन उ़-लमाए अहले सुन्नत دامت فیوضہم के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का **मुत़ा-लआ़** करने लगे, तफ़रीह़ की ख़ात़िर सफ़र के आ़दी **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले बन गए और "खाओ, पियो और जान बनाओ" के ना'रे को मक़्सदे ह़यात समझने वालों ने इस म-दनी मक़्सद को अपना लिया कि (اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) "**मुझे**

अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।'' اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** का म-दनी पैग़ाम (ता दमे तह़रीर) दुन्या के कमो बेश 66 मुमालिक में पहुंच चुका है ।

दा'वते इस्लामी की येह अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमात बिला शुबा इस तह़रीक के बानी व अमीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लिये सवाबे जारिय्या का ज़रीआ़ हैं । जैसा कि श-रफ़े मिल्लत उस्ताज़ुल उ-लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद **अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी** علیہ رحمۃ اللہ الغنی लिखते हैं : ''ह़दीस शरीफ़ में है : **مَنْ اَحْیَا سُنَّتِیْ بَعْدَ مَا اُمِیْتَتْ فَلَهٗ اَجْرُ مِائَةِ شَهِیْدٍ** या'नी : जिस शख़्स ने हमारी ऐसी सुन्नत को राइज किया जिसे तर्क कर दिया गया हो उस के लिये सो शहीदों का सवाब है । इस ह़दीसे मुबारक की रोशनी में अन्दाज़ा कीजिये कि अमीरे **दा'वते इस्लामी**, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ीन को **कितने शहीदों का सवाब मिलेगा ? जिन की मसाइ़ये जमीला से लाखों अफ़राद न सिर्फ़ नमाज़ी बन गए हैं बल्कि सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की सुन्नतों पर अ़मल पैरा हो गए ।**

इस काम्याबी में जहां ह़ज़रते अमीरे **दा'वते इस्लामी** مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی की शबो रोज़ कोशिशों और उन के बयानात का दख़्ल है वहां **फ़ैज़ाने सुन्नत** का भी बड़ा अ़मल दख़्ल है, **फ़ैज़ाने सुन्नत** फ़क़ीर के अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ **पाकिस्तान में सब से ज़ियादा शाएअ़ होने वाली किताब है ।''**

(तक़रीज़ बर फ़ैज़ाने सुन्नत)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बुलन्द पाया मक़ाम और अ़-ज़मत का अन्दाज़ा **इमामे अहले सुन्नत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस मुबारक फ़तवा से लगाया जा सकता है : (जो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस सुन्नी ह़-नफ़ी शख़्स के बारे में दिया जिस की ख़िदमाते दीन **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीनी ख़िदमात से मुमा-सलत रखती थीं ।)

इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का मुबारक फ़तवा

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आ'ला ह़ज़रत अश्शाह मौलाना **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से एक सुन्नी ह़-नफ़ी शख़्स के बारे में कुछ इस त़रह़ सुवाल हुवा कि हम ऐसे शख़्स से **अ़क़ीदत** रखें या नहीं जिस के बयानात के असर से शिर्क व बिदआ़त वग़ैरा **काफ़ूर** होती चली जाती हैं, और हज़ारहा मुसल्मान, जो ज़रूरी शआ़इरे इस्लाम और नमाज़ रोज़ों के मसाइल से भी वाक़िफ़िय्यत न रखते थे वोह **ख़ुद** या'नी नमाज़ के मसाइल सिखाने के लिये दर्सो बयान करने वाले और इमामे मसाजिद हो गए, और येह शख़्स मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर दुश्मनाने दीन के मुक़ाबले में अ़लल ए'लान **जिहादे लिसानी** (या'नी ज़बानी जिहाद) करता है, अगर ऐसे शख़्स को मुसल्मान, आ़लिमे बा अ़मल और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का वारिस समझते हुए कुछ नक़्द वग़ैरा बिला उस की त़मअ़ (या'नी बिग़ैर ख़्वाहिश) और दर-ख़्वास्त के ता'ज़ीमन उस की नज़्र करें और अहले इस्लाम ऐसे शख़्स को **मो'तक़द अ़लैह** (या'नी जिस शख़्स से अ़क़ीदत रखी जाए) तसव्वुर करें या नहीं ? और इस नज़्र और तोह़फ़े के बदले अज्रे अ़ज़ीम पाएंगे या नहीं ?

इस सुवाल का जवाब देते हुए आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت

फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 19 के सफ़हा 433 पर लिखते हैं [1] : अगर फ़िल वाक़ेअ़ वोह शख़्स उ़-लमाए अहले सुन्नत व जमाअ़त ایّدھم اللہ تعالٰی से है और जो बातें ह़क़ी-क़तन शिर्क हैं उन्ही के मो'तक़िद (या'नी ए'तिक़ाद रखने वाले) को मुशरिक कहता है और अह़कामे मुश्रिकीन में दाख़िल करता है और जो नौ पैद (या'नी नई) बातें मुख़ालिफ़े शरीअ़त व मुज़ाहिमे सुन्नत (या'नी सुन्नत को रोकने वाली) ईजाद की गईं उन्हीं को बिद्अ़ते शर-इ़य्या व मज़्मूमा व शनीआ़ जानता और उन से नह्य व तह़ज़ीर (या'नी मन्अ़ करता, डर सुनाता) है, और शआ़इरे इस्लाम (म-सलन मसाजिद, अज़ान , ह़ज वग़ैरा) और नमाज़ सलातो सियाम (या'नी नमाज़ व रोज़ा) वग़ैरहा के अह़काम सह़ीह़ सह़ीह सिखाता और बा रिआ़यते शराइत़ व क़वाइद एह़तिसाब **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ** और **نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ** (या'नी बा अन्दाज़े अह़सन नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना) बजा लाता है, और वा'ज़ में रिवायाते बात़िला, व ख़ुराफ़ाते मुख़-त-रआ़ (या'नी मन घड़त बक्वासात) व बयानात मुशीरए अवहाम (या'नी ऐसी बातें जो वह्म पर मब्नी हों) व मुफ़्सिदए ख़यालाते अ़वाम (या'नी आ़म लोगों में पाए जाने वाले ग़लत़ ख़यालात) से एह़तिराज़ रखता (या'नी बचता) और इल्मे काफ़ी व फ़हमे साफ़ी (या'नी वाज़ेह़ समझ) के साथ हिदायत व इर्शाद में ठीक मे'यारे शर-अ़ पर चलता है, तो उसे **न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि इस ज़माने में अराकीने दीनो सुन्नत** (या'नी दीनो सुन्नत के सुतून) व ख़ु-लफ़ाए रिसालत عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّحِيَّة (या'नी सरकार **علیہ الصلوٰۃ والسلام** का "ख़लीफ़ा" व "नाइब") और **औलियाए जनाबे** अ-ह़दिय्यत आलाए जिल्लत (या'नी **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ

1. इस फ़तवा में जहां अल्फ़ाज़ मुश्किल महसूस हुए सलासत व रवानी को मद्दे नज़र रखते हुए इन के मा'ने दर्ज कर दिये गए हैं ताकि समझने में आसानी रहे।

के **औलियाए कामिलीन** और आ'ला ने'मतों में से) **समझना** चाहिये और उस की जो ख़िदमत हो सके सलाह़ व फ़लाहे दारैन व रिज़ाए रब्बुल मश्रिक़ैन व ख़ुश्नूदिये सय्यिदुल कौनैन है । جَلَّ جَلَالُہٗ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ।

(وَاللّٰہُ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَم)

(माख़ूज़ : फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, जि. 19, स. 433)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت का येह मुबारक फ़तवा फ़ी ज़माना **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **और हर वोह सुन्नी आ़लिम व मुबल्लिग़ जो इस मुबारक फ़तवे के मुत़ाबिक़ सुन्नतों की धूमें मचाते हैं उन की ज़ाते मुक़द्दसा की मुकम्मल अ़क्कासी करता है। आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने एक अ़लाक़े या शहर में म-दनी काम के लिये कोशिश फ़रमाने वाले आ़लिमे अहले सुन्नत के लिये फ़रमाया कि उन्हें न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि इस ज़माने में **दीनो सुन्नत का सुतून,** सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **ख़लीफ़ा व नाइब** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **कामिल औलिया** में से जानना चाहिये, तो जिस हस्ती को दुन्या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के नाम से पुकारती हो, जिन के **तक़्वा, परहेज़ गारी और दीनी ख़िदमात** की धूम दुन्या के कोने कोने में मच रही हो । जिन के सुन्नतों भरे **बयानात** व पुर तासीर **तस्नीफ़ात व तालीफ़ात** की ब-र-कतों से हज़ारहा नहीं **लाखों मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका हो**। उन के मक़ाम व मर्तबे का कौन अन्दाज़ा लगा सकता है ? **अहले सुन्नत** के एक मशहूर मुफ़्ती व शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मन्ज़ूर अह़मद फ़ैज़ी** علیہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की तह़रीर मुला-ह़ज़ा हो :

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम इर्शाद फ़रमाया !

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم एक शख़्स ने **रौज़ए मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ाज़िरी दी अपनी त़रफ़ से **सलाम** पेश किया फिर **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी र-ज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه की त़रफ़ से सलाम पेश किया तो **ज़िन्दा नबी**, जाने जां नबी, जाने जहां नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''मेरा भी उन को (या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** को) सलाम कहना।'' اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذٰلِكَ **येह आ़-लमे बेदारी की बात है । और ह़ज़रत** (या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه) **से मु-तअ़ल्लिक़ रूयाए सालिह़ा** (या'नी अच्छे ख़्वाब) बहुत हैं । اَللّٰهُمَّ زِدۡ فَزِدۡ وَادۡمُ وَبَارِكۡ فِيۡهِ ... (वस्सलाम) रक़्महुल फ़क़ीर मुह़म्मद मन्ज़ूर अह़मद फ़ैज़ी عُفِیَ عَنۡهُ غُفِرَلَه ख़्वेदमुलह़दीस, बजामिअ़तुल मदीना करात्शी, 29 रबीउ़ल अव्वल हि. 1425

(10 र-मज़ानुल मुबारक (1427 हि. 2006) बरोज़ बुध दो पहर कमो बेश 1:00 बजे अह़मदपूर शरक़िया (पंजाब) में अ़ल्लामा फ़ैज़ी साह़िब के साह़िब ज़ादगान से जब मज़्कूरा वाक़िए़ से मु-तअ़ल्लिक़ बात हुई तो उन्हों ने इस की तस्दीक़ **मअ़ दस्त-ख़त़** इस त़रह़ फ़रमाई कि **येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ ख़ुद हमारे वालिदे बुज़ुर्ग वार** رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه **का ही है ।** निजी मह़फ़िलों में बारहा वोह अपने ह़वाले से सुनाया करते वरना अक्सर आ़जिज़ी फ़रमाते हुए अपने नाम के इज़्हार के बजाए ''एक शख़्स'' कह कर ख़ुद को छुपाते । वालिदे बुज़ुर्ग वार رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के सामने अगर कोई **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه के ख़िलाफ़ लब कुशाई की कोशिश करता तो बरमला आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه जलाल की कैफ़िय्यत में फ़रमाते, ख़ामोश रहो ! मैं ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِیَه **को सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की बारगाह में बहुत अच्छी ह़ालत में देखा है । उन का बारगाहे रिसालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **में कितना बड़ा मक़ाम है, ये मुझे मा'लूम है, तुम लोग नहीं जानते ।)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه न **सिर्फ़ ख़ुद आ़लिम** हैं बल्कि आ़लिम गर भी हैं। चुनान्चे आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इ़ल्म दोस्ती और इशाअ़ते इ़ल्मे दीन की तड़प के नतीजे में **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम जामिअ़तुल मदीना की सब से पहली शाख़ 1995 ई. में न्यु कराची के अ़लाक़े मद्र-सतुल मदीना (गोधरा कॉलोनी बाबुल मदीना कराची) की दूसरी मन्ज़िल में खोली गई। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मुबल्लिग़ीने **दा'वते इस्लामी** की हुसूले इ़ल्मे दीन की भरपूर तरग़ीब के नतीजे में जहां लाखों आ़शिक़ाने रसूल, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बने वहीं कसीर ता'दाद ने बा क़ाइदा **इ़ल्मे दीन** के हुसूल के लिये जामिअ़तुल मदीना का भी रुख़ किया। यूं दुन्या भर बिल ख़ुसूस पाकिस्तान में **जामिअ़तुल मदीना** की मज़ीद शाख़ें खुलती चली गईं। ता दमे तह़रीर **जामिअ़तुल मदीना** की दुन्या भर में बीसियों शाख़ें क़ाइम हो चुकी हैं, जिन में सिर्फ़ पाकिस्तान में इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के 100 से ज़ाइद जामिआ़त हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां दीगर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने की ईमान अफ़रोज़ बहारें (ह़िकायात) हैं, वहीं **उ़-लमाए दा'वते इस्लामी** के भी **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी के कसीर वाक़िआ़त हैं जो अपने अन्दर कशिश व इम्बिसात़ और

तरग़ीब का ख़ज़ाना समोए हुए हैं। इन में से एक म–दनी इस्लामी भाई का ह़लफ़िया बयान है कि ''दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता होने की मुझे ऐसी ब–र–कतें नसीब हुई कि मुझ गुनहगार को अब तक 17 मर्तबा **मीठे मीठे आक़ा,** म–दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो चुकी है।'' **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذٰلِكَ**

दा'वते इस्लामी के इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती इदारे **अल मदी–नतुल इ़ल्मिय्या** के शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ने उम्मत की इस्लाह़ व ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त **उ़–लमाए दा'वते इस्लामी की बहारों** को शाएअ़ करने का क़स्द किया। चुनान्चे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तारीख़े विलादत 26 र–मज़ान की निस्बत से 26 मुन्तख़ब बहारों पर मुश्तमिल इस सिल्सिले का पहला रिसाला ''फ़ैज़ाने **अमीरे अहले सुन्नत**'' के उ़न्वान से पेशे ख़िदमत है।

हमें चाहिये कि इस रिसाले को पढ़ने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लें, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, **सुल्त़ाने बह़रो बर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ۵۹۴۲، ص ۱۸۵) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा। ''**उ़–लमाए दा'वते इस्लामी**'' के 16 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की ''16 **निय्यतें**'' पेशे ख़िदमत हैं।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (अगले सफ़्ह़े

के ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) । ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾7﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा । ﴾9﴿ हर बहार के इख़्तिताम पर दी गई दुआ, "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**" पढ़ने का मा'मूल बनाऊंगा । ﴾10﴿ दूसरों को येह रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा । ﴾11﴿ इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी ।" ﴿مؤطا امام مالك ، ج ٢ ، ص ٤٠٧ ، الحديث : ١٧٣١﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़-फ़तन दूंगा । ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) याद दाश्त वाले सफ़ह़े पर अहम निकात लिखूंगा । ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा । ﴾14﴿ इस रिसाले के मुत़ा-लआ़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा । ﴾15﴿ अगर कोई शर-ई ग़-लत़ी मिली तो तह़रीरी त़ौर पर नाशिर या मुसन्निफ़ को आगाह करूंगा । (मुअल्लिफ़ व नाशिरीन वग़ैरा को सिर्फ़ ज़बानी अग़लात़ बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता ।)

शो'बए इस्लाही कुतुब,

मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या

﴾दा'वते इस्लामी﴿

(1) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी [1] علیہ رحمۃ اللہ الغنی ज़ोह्दो वरअ़ और तक़्वा व परहेज़ गारी में अपनी मिसाल आप थे और इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे : ''كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ'' या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो।''

(صحیح البخاری، الحدیث ٦٤١٦، ج٤، ص ٢٢٣، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी علیہ رحمۃ اللہ الغنی ने **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने के बारे में कुछ यूं बताया कि मैं ने पहली मर्तबा गुलज़ारे ह़बीब (सोल्जर बाज़ार बाबुल मदीना कराची) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की तो वहां की जाने वाली इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ सुन कर बहुत मु-तअस्सिर हुवा बस इस दुआ़ का अन्दाज़ पसन्द आ गया। इस के बा'द **दा'वते इस्लामी** की मन्ज़िलें त़ै होती चली गईं।'' اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

आप علیہ رحمۃ اللہ الغنی ने 1995 ई. में दर्से निज़ामी करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला लिया। दर्से निज़ामी मुकम्मल करने के बा'द अपने पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों दस्तार बन्दी का शरफ़ पाया। मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** علیہ رحمۃ اللہ الغنی ने फ़तवा नवेसी की तरबिय्यत जामिआ़ ग़ौसिया र-ज़विय्या सख़्खर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से ली और 15 शा'बान, 1421 हि. ब मुत़ाबिक़ 13 नवम्बर 2001 ई. को पहला फ़तवा लिखा। पहले पहल तक़रीबन एक साल दारुल

1. मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी के तफ़्सीली ह़ालाते ज़िन्दगी जानने के लिये ''**मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी**'' नामी किताब मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

इफ़्ता अहले सुन्नत (''जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान'' बाबरी चोक (गुरू मन्दिर) बाबुल मदीना कराची) में रहे। इस के बा'द तक़रीबन तीन साल दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान (जामेअ़ मस्जिद सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْبَارِی'' नज्द पोलीस चोकी, खारादर, बाबुल मदीना कराची) में रहे । फिर तक़रीबन 11 माह मक्तबे मजलिसे इफ़्ता (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना) में रहे आप के फ़तावा की ता'दाद तक़रीबन 4000 है। इस के इ़लावा तफ़्सीरे जलालैन का तक़रीबन 1200 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल अ़-रबी ह़ाशिया भी लिखा और तफ़्सीरे कुरआन ''सिरातुल जिनान'' के छ पारों पर भी काम मुकम्मल कर चुके थे ।

आप **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में बहुत फ़आ़ल थे । आप पहले पहल कन्ज़ुल ईमान मस्जिद के क़रीबी अ़लाक़े पटेल पाड़ा में भी रिहाइश पज़ीर रहे । इन के अ़लाक़े (ए'जाज़ कॉलोनी, लसबेला चौक) के इस्लामी भाइयों का बयान है कि ★ ''मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْبَارِی की **इन्फ़िरादी कोशिश** से कई इस्लामी भाई नमाज़ी बने, अपने चेहरे पर दाढ़ियां सजा लीं और **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए। ★ येह बिला नाग़ा **सदाए मदीना** लगाया करते थे और अपनी रिहाइश गाह वाके़अ़ पटेल पाड़ा से बिलाल मस्जिद या ग़ौसिया मस्जिद (लसबेला चौक) तक **सदाए मदीना** लगाते हुए आया करते थे। ★ **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत फ़रमाते★**मद्र-सतुल मदीना** बराए बालिग़ान पढ़ाते थे ★ एक मर्तबा हमारे सामने अन्दरूने सिन्ध से आने वाले 50 से 60 कुफ़्फ़ार, इन के हाथ पर मुसल्मान हुए ★ इन की तरग़ीब पर मु-तअ़द्दद इस्लामी भाइयों ने अपने बच्चों को ह़ाफ़िज़े

क़ुरआन बनाया ★ उस अ़लाक़े में बा'ज़ नौ जवान ज़बान की तेज़ी की वजह से क़ुफ़्रिय्या कलिमात भी बोल जाते थे, आप ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और तजदीदे ईमान के बारे में उन का ज़ेहन बनाया तो वोह ताइब हो गए और ज़बान की एह़तियात़ करने वाले बन गए ★ जितना अ़र्सा हमारे अ़लाक़े में रहे, कभी अपनी ज़ात के लिये किसी से सुवाल नहीं किया ★ हम ने उन्हें कभी फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू करते नहीं देखा ★ बहुत मिलन सार थे ★ कभी मु-तकब्बिराना अन्दाज़ में गुफ़्त-गू करते नहीं देखा न दर्से निज़ामी से पहले न बा'द में.....

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी علیہ رحمۃ اللہ الغنی को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का बड़ा जज़्बा था। आप त़ालिबे इ़ल्मी के दौर में भी हर माह **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया करते थे। एक इस्लामी भाई का बयान है : एक मर्तबा म-दनी क़ाफ़िला तय्यार न हो सका क्यूं कि मुक़र्ररा वक़्त पर इस्लामी भाई न पहुंच पाए तो मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** علیہ رحمۃ اللہ الغنی मुझे तन्हा ही ले कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये तय्यार हो गए और हम दोनों इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िले के लिये रवाना हो गए।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ म-दनी क़ाफ़िलों से क़ौलन व अ़-मलन बहुत **प्यार** किया करते थे। अगर उन से कोई मस्अला पूछा जाता तो मस्अला बयान फ़रमा कर कहते कि मज़ीद मा'लूमात का जज़्बा बढ़ाने के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये। नए पुराने सब इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दिया करते थे। म-दनी मश्वरों में भी अक्सर येह शे'र सुनाया करते।

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं क़ाफ़िले की तय्यारी में
जो मुझ को देख ले वोह क़ाफ़िले के लिये तय्यार हो जाए

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **''म-दनी इन्आ़मात''** पर भी पाबन्दी से अ़मल किया करते थे। उन के घर वालों का बयान है कि जब कभी रात को किसी काम से उन के कमरे में जाना हुवा तो अक्सर देखा जाता कि उन के पास म-दनी इन्आ़मात का कार्ड होता और येह उस पर निशान लगा रहे होते। बाबुल मदीना (कराची) की मजलिसे म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार का बयान है कि मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का मा'मूल था कि हर माह पाबन्दी से सब से पहले म-दनी इन्आ़मात का कार्ड जम्अ़ करवाते। मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पाबन्दी से **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत किया करते थे और मुकम्मल तवज्जोह के साथ बयान वग़ैरा सुना करते थे। अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी जुमा'रात भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और सारी रात फ़ैज़ाने मदीना ही में रहे। मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की तन्ज़ीमी कारकर्दगी भी मिसाली थी।

7 फ़रवरी 2002 ई. में अपने मुर्शिदे कामिल शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के हमराह ह़ज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरह की **सआ़दत** से मुशर्रफ़ हुए। जब अरकाने ह़ज अदा करने के बा'द **म-दनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी की सुहानी घड़ियां आईं तो आप के **मुर्शिदे कामिल** ने जब **गुम्बदे ख़ज़रा** की ज़ियारत कराने के लिये आप के झुके हुए सर को ऊपर उठाया तो आप ने अपने मुर्शिदे कामिल **مدظلہ العالی** की आंखों की त़रफ़ देखना शुरूअ़ कर दिया, यूं गोया आप के मुर्शिदे कामिल **गुम्बदे ख़ज़रा** को देख

रहे थे और मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों में गुम्बदे ख़ज़रा के नज़ारे कर रहे थे।

मुर्शिद की आंखों से रौज़े को मैं देखूं
और गुम्बदे ख़ज़ारा के जल्वे को मैं देखूं

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه 2002 ई. में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बने और ता ह़यात मजलिसे शूरा में शामिल रहे, इस के साथ साथ आप **दा'वते इस्लामी** की मजलिसे तह़क़ीक़ाते शर–इय्या, मजलिसे इफ़्ता, मजलिसे जामिअ़तुल मदीना, मजलिसे इजारा, मजलिसे म–दनी मुज़ाकरा के निगरान और मजलिसे मालियात, मजलिस बराए इलेक्ट्रोनिक मिडिया, मजलिसे मक–त–बतुल मदीना, पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, बाबुल मदीना मुशा–वरत के रुक्न और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) के उस्ताज़ भी थे। अक्सर फ़रमाया करते कि : **''मुझे जो इ़ज़्ज़त मिली मेरे मुर्शिद का स–दक़ा है।''**

18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि. ब मुत़ाबिक़ 17 फ़रवरी 2006 ई. जुमुआ़ को बा'द नमाज़े जुमुआ़ इस दुन्या से रुख़सत हो गए। (اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने इस म–दनी बेटे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और अपने हाथों से क़ब्र में उतारा। आप का मज़ारे पुर अन्वार सह़राए मदीना नज़्द टोल प्लाज़ा सुपर हाईवे बाबुल मदीना कराची में है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो... और... इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** से मु-तअस्सिर हो कर **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता होने वाले मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی अपने किरदार व अ़मल से दूसरों के लिये क़ाबिले रश्क बन गए और नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के बा'द अपने ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ पहुंचे कि उन के लिये आज भी **ईसाले सवाब** का सिल्सिला जारी है। हमें भी चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त में न सिर्फ़ खुद पाबन्दी से शिर्कत करें बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को भी इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) अमीरे अहले सुन्नत के पुर तासीर बयान ने आ़लिम बनने का जज़्बा दिया

सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब) के मुक़ीम इस्लामी भाई मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी مدظله العالی का बयान कुछ यूं है कि मैं घर के क़रीब वाक़ेअ़ एक मस्जिद में ह़िफ़्ज़ का त़ालिबे इ़ल्म था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद में जा कर बा जमाअ़त **नमाज़** पढ़ने का मा'मूल तो था मगर मेरा सर **इमामा शरीफ़** से ख़ाली था। मेरे वालिद साहि़ब (जो कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे) मुझे **इमामा शरीफ़** बांधने और सुन्नतों की ख़िदमत करने की तरग़ीब देते मगर मेरा ज़ेह्न न बन पाता। एक मर्तबा वालिद साहि़ब मुझे अपने साथ "**हजवेरी मस्जिद**" में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ले गए। मैं वहां पर होने वाले सुन्नतों भरे बयान, ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ,

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ के दौरान शु-रकाए इज्तिमाअ़ की आहो ज़ारी से बेहद मु-तअस्सिर हुवा। मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। चुनान्चे इज्तिमाअ़ से वापस घर पहुंचते ही मैं ने अपने वालिद साहिब से दर-ख़्वास्त की, कि मेरे सर पर **सब्ज़ सब्ज़** इमामा शरीफ़ सजा दीजिये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वोह दिन और आज का दिन येह सब्ज़ सब्ज़ इमामा मेरे लिबास का हिस्सा बन चुका है।

इल्मे दीन के अ़ज़ीम शो'बे से मेरी वाबस्तगी की इब्तिदा इस त़रह़ हुई ! मैं ने **दा'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (मदीना टाउन) में क़ाइम **मद्र-सतुल मदीना** के अन्दर **शो'बए ह़िफ़्ज़** में दाख़िला ले लिया। इस दौरान शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सुन्नतों भरी तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** में दिये गए इल्मे दीन के **फ़ज़ाइल** पढ़ कर मेरे दिल में **इल्मे दीन** ह़ासिल करने का जज़्बा पैदा हुवा। मैं ने पहली मर्तबा "सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद)" ही में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत की। वोह इस त़रह़ कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मादारान के "म-दनी मश्वरा" में तशरीफ़ लाए थे। मुझे क़रीब से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत का बहुत **शौक़** था ! चुनान्चे मैं "म-दनी मश्वरा" शुरूअ़ होने से पहले ही आगे जा कर बैठ गया। जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : जो पहले से आगे आ कर बैठे, उन्हों ने तो सह़ीह़ किया मगर जो कन्धे फलांगते, धक्के देते हुए आगे पहुंचे, उन्हों ने ग़लत़

किया और मुसल्मान को तक्लीफ़ पहुंचाई, लिहाज़ा वोह **तौबा** करें। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येह बात सुन कर मैं बेहद **मु-तअस्सिर** हुवा कि उन्हों ने आते ही शरीअ़त का बहुत प्यारा हुक्म सुना कर ''एह़तिरामे मुस्लिम'' का दर्स दिया और यूं मैं उन का दिलो जान से **गिरवीदा** हो गया। त़रीक़त के ह़वाले से एक तसव्वुर जो मेरे ज़ेह्न में था कि पीर को तक़्वा व परहेज़ गारी की **आ'ला मिसाल** होना चाहिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मैं ने इस से बढ़ कर पाया। चुनान्चे मैं आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामने करम से वाबस्ता हो कर **अ़त्तारी** बन गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने हिफ़्ज़ भी **मुकम्मल** कर लिया।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मर्कज़ुल औलिया लाहोर में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में तशरीफ़ लाए तो मुझे भी वहां ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने वहां **इल्मे दीन के फ़ज़ाइल** पर बयान किया, इल्म का तो मैं पहले ही से प्यासा था, मगर इस बयान को सुन कर तो मैं ने दिल में तहिय्या कर लिया कि अब **मुझे आ़लिम ही बनना है**। मैं ने कुछ ही दिन पहले मेट्रिक का इम्तिह़ान दिया था। पहले तो मैं ने **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **दा'वते इस्लामी** के 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया फिर दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लिया। इस दौरान **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम भी करता रहा। फ़ारिग़ुत्तह़सील होने के बा'द **जामिअ़तुल मदीना** (फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गुलिस्ताने जौहर बाबुल मदीना कराची) में तक़रीबन 5 साल तक (मुन्तहा द-रजात व दौरए ह़दीस में **तदरीस** की सआदत मिली फिर जामिअ़तुल मदीना (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची) में मुन्तहा द-रजात

व दौरए ह़दीस और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह में) 2 साल बत़ौरे मुदर्रिस ख़िदमात सर अन्जाम दीं । इस के साथ साथ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में (बत़ौरे मुफ़्ती व मुसद्दिक़) ख़िदमते इफ़्ता का सिलिसला रहा । 1428 हि. में ज़ाती मजबूरी कि बिना पर **सरदारआबाद** वापसी हुई । ता दमे तह़रीर जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना सरदारआबाद) में (मुन्तहा द–रजात व दौरए ह़दीस में) **तदरीस** के साथ साथ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (सरदारआबाद) में (बत़ौरे **मुफ़्ती व मुसद्दिक़**) दीन की ख़िदमत कर रहा हूं ।

अल्लाह *करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*

ऐ **दा'वते इस्लामी** *तेरी धूम मची हो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की ब–र–कत से किस त़रह़ मज़्कूरा मुफ़्ती साह़िब **म–दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए । इस लिये हमें भी चाहिये कि **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में न सिर्फ़ ख़ुद शरीक हों बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को दा'वत दे कर बल्कि घरों से बुला कर साथ लेते आएं । अगर कोई हमारी **इन्फ़िरादी कोशिश** से **दा'वते इस्लामी** के **म–दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया तो हमारे लिये भी सवाबे जारिय्या का अ़ज़ीम ज़रीआ़ बन जाएगा । येह भी मा'लूम हुवा कि म–दनी काम के दौरान शर–ई अह़कामात की पासदारी करने में दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां पोशीदा हैं जैसा कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जब **म–दनी मश्वरे** में शर–ई हुक्म बयान किया और तौबा की तरग़ीब दी तो येह इस्लामी भाई किस क़दर

मु-तअस्सिर हुए थे । इ़लावा अज़ीं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इ़ल्म के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल बयान सुन कर उस इस्लामी भाई का ज़ेह्न बना और येह अव्वलन आ़लिम फिर मुदर्रिस व मुफ़्ती बने, इस लिये हमें चाहिये कि हम हर मुसल्मान को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात की केसिटें, वी.सी.डीज़ सुनने की ख़ूब ख़ूब तरग़ीब दें ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) कॉलिज का स्टूडन्ट मुफ़्ती कैसे बना ?

ज़िल्अ़ साहिवाल (पंजाब) की तह़सील चीचा वत़नी के मुक़ीम इस्लामी भाई मुफ़्ती फ़ैज़ रसूल अ़त्तारी **مدظله العالی** के बयान का ख़ुलासा है कि मेरे वालिदे बुज़ुर्ग वार आ़लिमे दीन थे और गाउं की मस्जिद में इमामत फ़रमाते थे। एक रोज़ वालिदे मोह़तरम एक ज़ख़ीम किताब बनाम ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' लाए और मुझे फ़रमाया कि रोज़ाना मस्जिद में इस का दर्स दिया करो। मेरी उ़म्र उस वक़्त तक़रीबन 15 साल थी और सातवीं जमाअ़त में पढ़ता था । 3 साल बा'द वालिद साह़िब के हुक्म पर मज़ीद दुन्यवी ता'लीम की ग़रज़ से ''बूरे वाला'' (अ़त्तार वाला) में इक़ामत इख़्तियार की और अपने वालिद साह़िब के एक दोस्त (जो इमामे मस्जिद थे) के साथ उन के हुजरे में रहने लगा। एक रोज़ हमारी मस्जिद में सब्ज़ इ़मामे वाले चन्द इस्लामी भाई पोस्टर लगाने आए जिस में हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की गई थी। मैं ने उन से तफ़्सीलात मा'लूम कीं तो उन्हों ने बड़ी मह़ब्बत के साथ बूरे वाला शहर सत़ह पर होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश फ़रमाई । हुस्ने अख़्लाक़ की शीरीनी से तर बतर दा'वत

में कुछ ऐसी तासीर थी कि मैं आने वाली जुमा'रात बरेल्वी मस्जिद (ह़बीब कॉलोनी) में **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में जा पहुंचा। वहां के मस्ह़ूर कुन **म-दनी माह़ोल**, ज़िक्रो ना'त, सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मुझे एक नई रूह़ानी लज़्ज़त से आश्ना किया। अगली जुमा'रात भी मैं **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा मगर इस मर्तबा मैं अकेला नहीं था बल्कि दा'वत दे कर कई इस्लामी भाइयों को साथ ले गया था। वक़्त के साथ साथ मैं **म-दनी माह़ोल** के क़रीब से क़रीब तर होता चला गया। मेरे जज़्बे और कोशिश को देखते हुए मुझे "इह़ात़ए शाह नवाज़ मस्जिद" का **ज़ैली निगरां** बना दिया गया। **म-दनी काम** करने का सिल्सिला जारी रहा यहां तक कि मैं ने मेट्रिक कर लिया। फिर मैं कमो बेश एक साल के लिये अपने घर (चीचा वत़नी) चला आया।

अपने शहर में भी **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** की तरकीब रही। हर माह **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और रोज़ाना **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक बयान सुनने की ब-र-कत से मेरे शबो रोज़ **रिज़ाए इलाही** عَزَّوَجَلَّ पाने की कोशिशों में बसर होने लगे। फिर मैं ने कॉलिज में दाख़िला ले लिया। **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने के बा वुजूद अभी तक किसी का मुरीद नहीं बना था। मैं किसी साह़िबे करामत मर्दे क़लन्दर की तलाश में था। फिर जब मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में मीनारे पाकिस्तान मैदान में **दा'वते इस्लामी** का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा तो मैं पहली बार शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नूरानी चेहरे पर नज़र पड़ते ही दिल ने गवाही दी

कि येही वोह मर्दे क़लन्दर हैं जिन की मुझे तलाश थी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन के ज़रीए सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर **''अ़त्तारी''** बन गया। मुर्शिदे कामिल की तवज्जोह ने दिल की दुन्या ही बदल डाली। मैं ने वालिदैन से इजाज़त ले कर सि. 1994 ई. में दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) के लिये दाख़िला ले लिया और ग़ालिबन सि. 2001 ई. में मुझे आ़लिम की सनद मिली, इस दौरान फ़तवा नवेसी की भी तरबिय्यत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से तक़रीबन 6 साल से **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना बाबुल मदीना कराची में (दर्से निज़ामी के मुन्तहा द-रजात, दौरए ह़दीस शरीफ़, तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह और तख़स्सुस फ़िल फ़ुनून में) तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम दे रहा हूं और **दा'वते इस्लामी** की मजलिसे तह़क़ीक़ाते शर-इय्या में **बत़ौरे मुफ़्ती** रुक्नियत भी ह़ासिल है।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
*इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आपने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत और **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी काम** करने की ब-र-कत से एक आ़म सा नौ जवान तरक़्क़ी करते करते **आ़लिम व मुफ़्ती** के अ़ज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ हो गया।

अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) पढ़ाने वाला मुफ़्ती कैसे बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा अ़त्तारी مدظله العالی के बयान का ख़ुलासा है कि मैं ने 14 साल की उ़म्र में मेट्रिक पास किया और मज़ीद ता'लीम के लिये कॉलिज जा पहुंचा। मेरा अक्सर वक़्त आ़म नौ जवानों की त़रह़ दोस्तों के साथ गपशप लड़ाते या क्रिकेट वग़ैरा खेलने में गुज़रता। हमारे अ़लाक़े में **सब्ज़ इ़मामा** और **सफ़ेद लिबास** में मल्बूस एक **आ़शिक़े रसूल** अक्सर बड़ी मह़ब्बत से मिलते और तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतें बताते और मुझे भी येह माह़ोल अपनाने की तरग़ीब देते। मैं उन के मह़ब्बत भरे अन्दाज़ से मु-तअस्सिर तो बहुत था मगर त़वील अ़र्से तक कोई पेश क़दमी न कर पाया। बिल आख़िर मैं उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से मस्जिद में बा'दे नमाज़े इ़शा क़ाइम किये जाने वाले **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में शिर्कत करने लगा। मैं जिस्मानी त़ौर पर कमज़ोर होने की वजह से अपनी अस्ल उ़म्र से बहुत छोटा दिखाई देता था, इस लिये मुझे अलग से बिठा कर पढ़ाया जाता। इसी वजह से एक बार मुझे मद्रसे में पढ़ाने से मा'ज़िरत भी कर ली गई। क्यूं कि वहां बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों की तरकीब थी। मगर मैं ने हिम्मत न हारी और दोबारा दाख़िले की कोशिश करता रहा। मेरे जज़्बे को देखते हुए मुझे दोबारा दाख़िला दे दिया गया। मैं **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में दुरुस्त कुरआन पढ़ना सीख गया।

दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी

मिला। जल्द ही मैं शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए मुरीद हो कर **''अ़त्तारी''** बन गया। मैं कमो बेश 8 साल **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में कुरआने पाक सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ाने की सआ़दत पाता रहा। इस दौरान मैं ने **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में भी शिर्कत की और नेकियों की मज़ीद रग़बत पाई। मैं ने सि. 1996 ई. में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सि. 2003 ई. में फ़ारिगुत्तह़सील हुवा। इस दौरान फ़तवा नवेसी की भी तरबिय्यत ले चुका था। पीरो मुर्शिद की शफ़्क़त से **मजलिसे तह़क़ीक़ाते शर-इय्या** के रुक्न की ह़ैसिय्यत से अपने फ़राइज़ अन्जाम देने के साथ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (कन्ज़ुल ईमान) में ता दमे तह़रीर बत़ौरे मुफ़्ती व मुसद्दिक़ ख़िदमते इफ़्ता की सआ़दत ह़ासिल है।

मक़्बूल जहां भर में हो ***दा'वते इस्लामी***
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) पढ़ाते पढ़ाते तवज्जोहे मुर्शिद की ब-र-कत से कॉलिज में पढ़ने वाले मज़्कूरा इस्लामी भाई **मुफ़्ती व मुसद्दिक़** बन गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तह़्त कुरआने पाक की ता'लीमात को आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** बालिग़ान की

तरकीब होती है। जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। आप भी इन **मदारिसुल मदीना** (बालिग़ान) में पढ़ने या पढ़ाने की निय्यत कर लीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद शाहिद अल अ़त्तारीय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 33 साल) का बयान कुछ यूं है : मेरे वालिदे गिरामी सौमो सलात के पाबन्द बा शर-अ़ मुसल्मान थे। इस लिये घर का माह़ोल भी दीनी था। मुझे एक ऐसी **तह़रीक** की तलाश थी जिस से वाबस्ता हो कर दीन की ख़िदमत कर सकूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द ही मुझे ऐसी तह़रीक मिल गई और वोह भी तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी**। जनवरी सि. 1992 ई. की बात है कि मैं नमाज़े इ़शा पढ़ने के लिये जामेअ़ मस्जिद मुह़म्मदी (निशात कॉलोनी लाहोर केन्ट) में ह़ाज़िर हुवा। नमाज़ पढ़ने के बा'द सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ इ़मामे वाले **तीन इस्लामी भाइयों** से मुलाक़ात हुई। उन्हों ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की। उन दिनों मैं मेट्रिक के **इम्तिह़ान** की तय्यारी में मस्रूफ़ था, लिहाज़ा मा'ज़िरत कर ली। उन में से एक ने मुझे मिसाल दे कर समझाया : ''प्यारे इस्लामी भाई ! अगर कोई हमें येह दा'वत दे कि फ़ुलां मक़ाम पर आइयेगा, आप को भारी रक़म पेश की जाएगी तो शायद हम उसी वक़्त अपने सब काम छोड़ कर वहां चले

जाएं मगर अफ़्सोस कि ढेरों **सवाब** कमाने के लिये हम किसी जगह जाने के लिये जल्द तय्यार नहीं होते ।'' उन के ये अल्फ़ाज़ मेरे दिल की गहराइयों में उतर गए और मैं ने फ़ौरन इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ह़ामी भर ली। जब मैं जुमा'रात को आर.ए R.A बाज़ार पहुंचा जहां से इज्तिमाअ़ में जाने के लिये गाड़ी चलती थी तो गाड़ी निकल चुकी थी क्यूं कि मुझे कुछ ताख़ीर हो गई थी। मैं कफ़े अफ़्सोस मलता हुवा वापस हो लिया। मस्जिद में गया तो एक नमाज़ी से मा'लूम हुवा कि **दा'वते इस्लामी** के बानी, शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** के नाम से एक ज़ख़ीम किताब तालीफ़ फ़रमाई है। मैं ने वोह किताब ली और पढ़ना शुरूअ़ कर दी । किताब के शुरूअ़ में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुख़्तसर ह़ालाते ज़िन्दगी दिये गए थे। जिन्हें पढ़ कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **तक़्वा व परहेज़ गारी** के अन्वार से मेरी आंखें ख़ीरा हो गईं, मेरे दिल में अ़क़ीदत के तूफ़ान मचलने लगे और आंखों से आंसू जारी हो गए कि इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसे **अल्लाह** वाले मौजूद हैं। मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि आइन्दा जुमा'रात ज़रूर इज्तिमाअ़ में जाऊंगा।

दूसरी जुमा'रात जब मैं इज्तिमाअ़ में जाने के लिये स्पेश्यल गाड़ी में सुवार हुवा तो इस्लामी भाइयों ने मेरी भरपूर ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई । रास्ते भर **ना'ते रसूले मक़्बूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ी जाती रही। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में मुझे सफ़र का इतना लुत़्फ़ आया कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं जन्नत में आ गया हूं। **सुन्नते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आरास्ता

नूरानी चेहरे, **गुम्बदे ख़ज़रा** के सब्ज़ रंग की निस्बत रखने वाले सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे मुझे बहुत अच्छे लगे। इज्तिमाअ़ में सुन्नतों भरे **बयान, हल्क़ए ज़िक्र** और **इजतिमाई दुआ़** ने मेरे दिलो दिमाग़ पर गहरे नुक़ूश छोड़े। बस वोह दिन और आज का दिन ! **मैं दा'वते इस्लामी का हो कर रह गया**। कुछ अ़र्से बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मर्कज़ुल औलिया तशरीफ़ लाए तो उन से बैअ़त कर के **अ़त्तारी** भी बन गया।

मेट्रिक के बा'द घर वालों ने मुझे कॉलिज में दाख़िल करवा दिया। मगर मेरा वहां दिल न लगा क्यूं कि **फ़ैज़ाने सुन्नत** से इ़ल्म व उ़-लमा के फ़ज़ाइल पढ़ कर मेरे दिल **में आ़लिम** बनने का शौक़ पैदा हो चुका था। वालिद साहिब ने मेरा रुजहान देख कर मुझे दर्से निज़ामी करने की इजाज़त दे दी। चुनान्चे मैं ने सि. 1993 ई. में एक सुन्नी दारुल उ़लूम में दाख़िला ले लिया। जहां पढ़ाई के साथ साथ मैं शहर सत्ह़ के ख़ादिम (निगरान) के त़ौर पर **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम भी करता रहा। एक रात मैं सोया तो ख़्वाब में अपने प्यारे प्यारे मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का दीदार हुवा। आप ने कुछ इस त़रह़ दरयाफ़्त फ़रमाया : "दर्से निज़ामी करने के बा'द **क्या इरादा है?**" मैं ने अ़र्ज़ की मैं आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाऊंगा फिर **जो आप हुक्म फ़रमाएं !** उस वक़्त से मेरा ज़ेह्न बन गया कि ख़ुद को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में पेश कर दूंगा। फिर जब मैं फ़ारिग़ुत्तह़सील होने के बा'द बाबुल मदीना कराची आने लगा तो **मेरी वालिदए मोह़तरमा** ने कुछ यूं फ़रमाया : "**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में मेरी त़रफ़ से अ़र्ज़ करना कि मैं ने अपना बेटा आप को सोंपा।"

जून सि. 2002 ई. में **बाबुल मदीना** आने के बा'द सब से

पहले मैं ने **क़ाफ़िला कोर्स** किया और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करता रहा। तक़रीबन 103 दिन के बा'द जब मैं **बारगाहे अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में हाज़िर हुवा तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पहले मुझ से सिने फ़रागत पूछा, फिर म-दनी क़ाफ़िला कोर्स के बारे में दरयाफ़्त करने और फ़िक़्ह में मेरी दिल चस्पी जानने के बा'द फ़रमाने लगे : **''क्या आप को दारुल इफ़्ता भेज दूं ?''** मैं ने अ़र्ज़ की : **''जो आप का हुक्म !''** चुनान्चे मैं तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) करने और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (बाबरी चोक गुरू मन्दिर बाबुल मदीना कराची) **फ़तवा नवेसी** की ख़िदमत सर अन्जाम देने लगा। मेरी ख़ुश नसीबी कि 19 जुमादिल आख़िर 1424 हि./18 अगस्त 2003 ई. को इफ़्ता की मज़ीद तरबिय्यत के लिये मुझे दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत नूरुल इरफ़ान (सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी मस्जिद, नज़्द पोलीस चोकी खारादर, बाबुल मदीना कराची) भेज दिया गया जहां मुझे उस्ताज़िल मुकर्रम, मुफ़्तिये **दा'वते इस्लामी**, मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम रुक्न, अल हाफ़िज़, अल क़ारी, मुफ़्ती अबू उ़मर **मुहम्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी** علیہ رحمۃ اللہ الغنی की रफ़ाक़त नसीब हुई। इसी दौरान एक साल जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना में तदरीस भी की। फ़िल वक़्त मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे करम के सदक़े **दा'वते इस्लामी** की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा, पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, बाबुल मदीना मुशा-वरत** के साथ साथ कई दीगर मजालिस म-सलन मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या, मजलिसे दारुल इफ़्ता, मजलिसे राबिता़ बिल उ़-लमा वल मशाइख़ में **रुक्नियय्यत** हासिल है। जब कि मजलिसे जामिआ़तुल मदीना और मजलिसे म-दनी मुज़ाकरा के ख़ादिम (निगरान) के तौर पर ख़िदमते दीन की सआ़दत हासिल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **इन्फ़िरादी कोशिश** से कितना फ़ाएदा होता है ! तीन इस्लामी भाइयों की **इन्फ़िरादी कोशिश** से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक होने वाले ये नौ जवान इस्लामी भाई न सिर्फ़ **आ़लिम** बल्कि तरक्की करते करते दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बन गए। लिहाज़ा हर मुसल्मान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करना और उन को नमाज़ों की दा'वत देना चाहिये। क्या मा'लूम हमारे चन्द अल्फ़ाज़ किसी की आख़िरत संवारने का **वसीला** बन जाएं। इज्तिमाअ़ वग़ैरा के लिये अगर बस या वेगन में आएं तो ड्राईवर व कन्डक्टर को भी शिर्कत की दर-ख़्वास्त करनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) रुक्ने शूरा बन गए

गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा, पंजाब) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद अ़क़ील अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 30 साल) का बयान कुछ यूं है **:** मैं ने सि. 1994 ई. में मेट्रिक का इम्तिह़ान पास किया तो वालिदे मोह़तरम ने दर्से निज़ामी करने का हुक्म दिया। चुनान्चे मैं ने एक सुन्नी दारुल उ़लूम में दाख़िला ले लिया। वहां मेरी मुलाक़ात **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता चन्द इस्लामी भाइयों से हुई। वोह उसी दारुल उ़लूम में पढ़ते थे। उन के **हुस्ने अख़्लाक़** और **मिलनसारी** ने मुझे बहुत **मु-तअस्सिर** किया। उन की तरग़ीब पर मैं **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा। वहां की पाकीज़ा फ़ज़ा और दीगर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात ने सोने पे सुहागा का काम किया। मैं भी **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने और सुनने की सआ़दत पाने लगा। हर पन्दरह दिन बा'द घर आता तो इस्लामी

भाइयों से **मुलाक़ात** के शौक़ से बेताब हो कर अपने शहर में भी ख़ुद इस्लामी भाइयों से मिलने पहुंच जाता। यूं रफ़ाक़त की मन्ज़िलें तै़ करते करते मैं मुकम्मल तौ़र पर **म-दनी माहो़ल** से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सर पर **सब्ज़ इमामा** भी सजा लिया और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया।

दर्से निज़ामी मुकम्मल करने के बा'द **दा'वते इस्लामी** के मुफ़्तियाने किराम की **इन्फ़िरादी कोशिशों** के नतीजे में **बाबुल मदीना** कराची पहुंचा और **जामिअ़तुल मदीना** में तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) में दाख़िला ले लिया। पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे फ़ैज़ असर से **दा'वते इस्लामी** के दीगर म-दनी कामों के साथ साथ **हर माह** म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का भी सिल्सिला रहा। फिर मुझ पर करम की ऐसी बरखा बरसी कि मैं ने यक मुश्त 12 माह, फिर उ़म्र भर के लिये ख़ुद को **म-दनी मर्कज़** के सामने पेश कर दिया। (ता दमे तह़रीर) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी की ब-र-कत से **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा, पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, बाबुल मदीना मुशा-वरत के साथ साथ कई दीगर मजालिस म-सलन मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या, मजलिसे मक-त-बतुल मदीना, मजलिसे दारुल इफ़्ता में **रुक्नियत** ह़ासिल है। जब कि मजलिसे इजारा और मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या के ख़ादिम (निगरान) के तौ़र पर ख़िदमते दीन की सआ़दत ह़ासिल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक हीरे को ऐसा चमकाया कि वोह **दा'वते इस्लामी** की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** का रुक्न बन कर **नूरे अमीरे अहले सुन्नत** से जग-मगाने लगा ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है । लिहाज़ा हमेशा **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) ख़्वाबे ग़फ़्लत से जगा दिया

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के एक इस्लामी भाई अ़ली असग़र अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 29 साल) का बयान है : येह सि. 1992 ई. की बात है जब मैं अपने आबाई शहर "**झुड्डो**" के गवर्नमेन्ट हाई स्कूल में नवीं क्लास का त़ालिबे इ़ल्म था । मेरे किरदार में होने वाली तब्दीली स्कूल के असातिज़ा और त़-लबा के लिये ह़ैरत का बाइ़स थी, वोह सब ह़ैरान थे कि अचानक इस लड़के का लबो लहजा, त़ौर त़रीक़ा, गुफ़्तार व किरदार सब किस त़रह़ तब्दील हो गया है ? उन की ह़ैरानगी का बाइ़स येह था कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी तर्क कर के **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो चुका था ।

मेरे म-दनी माह़ोल में आने का रास्ता कुछ इस त़रह़ बना कि मेरे वालिद साह़िब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाते तो मैं भी साथ चला जाता । वहां मग़रिब की नमाज़ के बा'द सब्ज़ इमामे वाले एक इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने के लिये आया करते थे । उस वक़्त हमारे शहर में गिनती के चन्द

इस्लामी भाई **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता थे। मैं भी उन के दर्स में बैठ जाता था। एक दिन दर्स देने के बा'द वोह मुझ समेत दीगर शु-रकाए दर्स से कहने लगे कि चूंकि मैं दूर से आता हूं, कभी ग़ैर हाज़िरी भी होती है, इस लिये अगर आप लोग भी दर्स का **त़रीक़ा सीख** लें तो बहुत मुफ़ीद रहेगा कि अगर मैं किसी दिन न पहुंच पाऊं तो दर्स का नाग़ा न हो। तज्वीज़ मा'कूल थी लिहाज़ा सब तय्यार हो गए और मुझ समेत तक़रीबन 4 अफ़राद ने दर्स का त़रीक़ा सीखना शुरूअ़ किया। कुछ ही दिन बा'द वोह इस्लामी भाई किसी वजह से न आ सके। मस्जिद में फ़ैज़ाने सुन्नत भी मौजूद नहीं थी लेकिन गुज़श्ता रोज़ **दुरूदे पाक** की फ़ज़ीलत पर दर्स में जो वाक़िआ़ बयान हुवा था वोह मुझे अच्छी त़रह़ याद था। मैं हिम्मत कर के खड़ा हुवा और वोही ह़िकायत सुना कर ज़िन्दगी का **पहला बयान** करने की सआ़दत ह़ासिल की। कुछ दिनों बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत भी दस्त-याब हो गई। जब कभी वोह इस्लामी भाई दर्स के लिये न पहुंच पाते तो मैं दर्स दिया करता। वोह मुबल्लिग़ इस्लामी भाई दर्स के बा'द वहीं बैठ कर हम पर मुख़ालिफ़ **म-दनी कामों** में ह़िस्सा लेने के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** किया करते और हमें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बारे में भी बताया करते। (**अल्लाह** तआ़ला उन्हें दोनों जहां में आबाद रखे।)

तक़रीबन 3 माह बा'द हमें येह ख़ुश ख़बरी सुनने को मिली कि क़िब्ला शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में बयान करने के लिये मीरपूर ख़ास तशरीफ़ ला रहे हैं। उन्ही इस्लामी भाई ने हमें इस अ़ज़ीमुश्शान **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक होने की दा'वत दी और हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ज़ाइल व कमालात बयान करते हुए

शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए **सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल होने की तरग़ीब भी दी। मैं ने ब मुश्किल घर से उस इज्तिमाअ़ में शरीक होने की इजाज़त ह़ासिल की और बड़ी शिद्दत से **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की तारीख़ का इन्तिज़ार करने लगा।

मुक़र्ररा तारीख़ को हमारे शहर से **आ़शिक़ाने रसूल** का बहुत बड़ा क़ाफ़िला दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करता, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ना'तें** पढ़ता हुवा तक़रीबन 63 किलो मीटर दूर वाक़ेअ़ सिन्ध के मशहूर शहर मीरपूर ख़ास की त़रफ़ रवाना हो गया। मैं भी इन ख़ुश नसीबों में शामिल था। शहर भर में **रौनक़ें** थीं जिधर देखते इ़मामों का सब्ज़ा दिखाई देता। इज्तिमाअ़ गाह में पहुंचे तो वहां भी बहुत रश था। मैं ने बहुत कोशिश की, कि आगे जा कर बयान सुनूं ताकि क़िब्ला शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत भी हो सके मगर मैं काम्याब न हो सका और **दीदारे अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से महरूम रहा। बयान के इख़्तिताम पर क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **इज्तिमाई तौबा** करवाने के बा'द **बैअ़त** करवाई तो मैं भी दामने **अमीरे अहले सुन्नत** से वाबस्ता हो कर अ़त्तारी बन गया और हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया,

जमीले क़ादिरी सो जान से क़ुरबान मुर्शिद पर
बनाया जिस ने मुझ जैसे को बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दिन ब दिन इस **म-दनी माह़ोल** के रंग में रंगता चला गया। मैं चुंकि नाज़िरा क़ुरआने पाक पढ़ना नहीं जानता था लिहाज़ा मैं ने बा'दे नमाज़े इ़शा क़ाइम होने वाले **मद्र-सतुल**

मदीना (बालिग़ान) में क़ुरआने पाक सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ने की कोशिशें भी शुरूअ़ कर दीं। आहिस्ता आहिस्ता **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देने की ज़िम्मादारी भी मुस्तक़िल तौ़र पर मुझे अ़ता कर दी गई। फिर **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में **बयान** की सआ़दत भी मिलना शुरूअ़ हो गई। चूंकि इल्मे दीन के हुसूल की तरग़ीब इस **म-दनी माहोल** की ब-र-कतों में से एक अ़ज़ीम ब-र-कत है ,चुनान्चे जब कभी हम हफ़्तावार और सालाना **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़**ात में शिर्कत की तरग़ीब के लिये किसी को **फ़ैज़ाने सुन्नत** से इल्मे दीन के फ़ज़ाइल पढ़ कर सुनाते तो अपने मुंह में भी पानी आ जाता और दिल में आ़लिम बनने की ख़्वाहिश मचलने लगती।

बाबुल मदीना कराची से **आ़शिक़ाने रसूल** के म-दनी क़ाफ़िले राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते हुए हमारे शहर में आया करते। दर्से निज़ामी की इस्तिलाह़ भी पहली बार उन्ही की ज़बानी सुनी और उन्ही के ज़रीए मा'लूम हुवा कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बाबुल मदीना** में **दा'वते इस्लामी** के तह़्त दर्से निज़ामी या'नी आ़लिम कोर्स शुरूअ़ हो चुका है। मैं इन्टर साइन्स का इम्तिह़ान पास कर चुका था। वालिद साह़िब के इन्तिक़ाल के बा'द बड़े भाई घर के वाह़िद कफ़ील थे। मैं पढ़ाई के साथ साथ मुख़्तलिफ़ कामकाज कर के अपना जेब ख़र्च चलाता था। मुझे गुमाने ग़ालिब था कि अब मेरी उ़म्र किसी न किसी जगह **नोकरी** करते हुए ही बसर होगी और बा क़ाइदा इल्मे दीन ह़ासिल करने का **ख़्वाब,** ख़्वाब ही रहेगा। मगर निगाहे मुर्शिद का सदक़ा कि ह़ैरत अंगेज़ तौ़र पर मेरे घर वालों ने सेंकड़ों मील दूर जा कर **इल्मे दीन** ह़ासिल करने की इजाज़त दे दी। इस सिल्सिले में सब से ज़ियादा शफ़क़त बड़े भाई की रही जिन्हों ने न सिर्फ़

अकेले घर को संभाला बल्कि मेरा ख़र्च भी उठाते रहे। **अल्लाह** तआ़ला उन्हे दोनों जहां में ख़ुश रखे। **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

मैं जून सि. 1996 ई. में अपने निगरान के साथ बाबुल मदीना कराची आया (**अल्लाह** तआ़ला उन की मसाई को क़बूल फ़रमाए) और जामिअ़तुल मदीना (गोधरा कॉलोनी न्यू कराची बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ अपने मुर्शिदे पाक **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तुफ़ैल येह कोर्स मुकम्मल किया और आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ही के मुबारक हाथों से दस्तारे फ़ज़ीलत अपने सर पर सजाई। इस के बा'द तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (या'नी मुफ़्ती कोर्स) किया। यूं मैं **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की अ़त़ा, उस के प्यारे **ह़बीब**, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम, अपने मुर्शिदे करीम शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के **फ़ैज़ान** और अपने असातिज़ए किराम دامت فیوضھم की **शफ़क़तों** की ब-र-कतों को पाता हुवा ता दमे तह़रीर 5 साल से जामिअ़तुल मदीना में (मुन्तहा द-रजात, दौरए ह़दीस शरीफ़ और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह की कुतुब की) **तदरीस** और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (नूरुल इरफ़ान सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी मस्जिद, नज़्द पोलीस चोकी बाबुल मदीना कराची) में **फ़तवा नवेसी** की ख़िदमत कर रहा हूं। इलावा अज़्ीं तस्नीफ़ व तालीफ़ का भी सिल्सिला है। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ आज **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतों की वजह से मैं अ़क़्ल व शुऊ़र की वादियों का **मुसाफ़िर** हूं, कुरआनो सुन्नत का नूर मेरा रहबर है, शरीअ़ते मुत़ह्हरा सीखना सिखाना और तरवीज व इशाअ़त ही मेरी ज़िन्दगी है।

ख़ुदा न ख़्वास्ता येह **म-दनी माहोल** नसीब न होता तो शायद जहालत के घुप अंधेरे मेरी ज़िन्दगी होते । (العیاذ باللہ عَزَّوَجَلَّ)

इसी माहोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी माहोल** कितना प्यारा प्यारा है । इस के दामन में आ कर मुआशरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ **म-दनी कामों** की बहारें भी आप के सामने हैं । जिस त़रह़ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की आफ़त भी राह़त में ढल जाएगी ।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) ख़ैर ख़्वाही की ब-र-कतें

बाबुल इस्लाम के मशहूर शहर **हैदरआबाद** के मुक़ीम इस्लामी भाई मुह़म्मद नो'मान रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) का बयान है : मैं नवीं क्लास में पढ़ता था और हुसूले दुन्या की **जुस्त-जू** में मगन था । मेरे अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों

से मेरी राहो रस्म बढ़ी तो वोह मुझे दा'वत दे कर मस्जिद ले गए। जब मैं नमाज़ पढ़ कर मस्जिद से निकलने लगा तो एक ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाई (जो मस्जिद के दरवाज़े के क़रीब खड़े थे) ने मुझ दर्स में शिर्कत की इल्तिजा की। मैं दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** में बैठ गया। येह मेरी **दा'वते इस्लामी** से रफ़ाक़त की इब्तिदा थी। फिर मैं ने इस्लामी भाइयों की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की जहां मेरे जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए। चन्द हफ़्तों बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान ब ज़रीअ़ए टेलीफ़ोन रिले हुवा। जिसे तमाम शु-रकाए इज्तिमाअ़ ने बड़े ग़ौर से सुना। बयान के बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इज्तिमाई तौबा और बैअ़त करवाई तो मैं भी **अ़त्तारी** बन गया। फिर जूं जूं वक़्त गुज़रता गया मैं **म-दनी माहोल** में रचता बसता गया।

मैं अपने ज़ैली हल्क़े में दो साल तक म-दनी काम करता रहा। **म-दनी माहोल** की ब-र-कत से मुझे फ़िक़्ही मसाइल से बहुत दिल चस्पी थी। इल्मे दीन सीखने के जज़्बे के तहूत मैं ने 1999 ई. में **जामिअ़तुल मदीना** (फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी गुलिस्ताने जौहर बाबुल मदीना कराची) में दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लिया। दर्से निज़ामी के साथ साथ **म-दनी काम** भी इस्तिक़ामत से करने की सआ़दत हासिल रही। मैं अपने जामिआ़ में म-दनी कामों का ख़ादिम (ज़िम्मादार) था। 2005 ई. में फ़ारिग़ुत्तहसील होने पर मीठे मीठे मुर्शिदे करीम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मेरे सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत के तौर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़

बांधा। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान के सदक़े आज मैं **पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना** और हैदरआबाद मुशावरत के साथ साथ मजलिसे जामिअतुल मदीना, (सूबाई सत्ह की) मजलिसे इजारा का **रुक्न** और डिवीज़न सत्ह पर मदनी इन्आमात का भी ज़िम्मादार हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) फ़ैज़ाने सुन्नत पढ़ कर आलिम बनने का जज़्बा मिला

मदीनतुल औलिया (मुलतान) के एक इस्लामी भाई मुहम्मद असद रज़ा अल अत्तारिय्युल मदनी (उम्र तक़रीबन 26 साल) का बयान कुछ यूं है : मैं ने जब होश संभाला घर में **सुन्नतों भरा** माहोल पाया। मेरे वालिदे मोहतरम (जो ता दमे तहरीर पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना (**दा'वते इस्लामी**) के रुक्न भी हैं।) **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** से **वाबस्ता** थे। घर वालों ने बचपन ही से मेरे सर पर सब्ज़ सब्ज़ **इमामा शरीफ़** का ताज सजा दिया और मैं दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता हो कर **अत्तारी** भी बन गया। यूं मैं **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** ही में परवान चढ़ा। हमारे ख़ानदान में कई लोग (दुन्यवी ए'तिबार से) आ'ला ता'लीम याफ़्ता और बड़े ओहदों पर फ़ाइज़ थे, चुनान्चे मेरा ज़ेहन भी ऐसा ही कुछ बनने का था। जब मैं नवीं क्लास में था मेरे वालिद साहिब ने मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सुन्नतों भरी तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से नेकी की दा'वत के बाब में से इल्म व उलमा के फ़ज़ाइल पढ़ने और याद करने का हुक्म दिया। जब मैं ने इन फ़ज़ाइल को पढ़ा मेरे दिलो दिमाग़ में हलचल मच गई और मैं ने **आलिम** बनने का ज़ेहन बना लिया।

मेट्रिक के बा'द 1998 ई. में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने के लिये **जामिअ़तुल मदीना** (गोधरा कॉलानी बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला ले लिया। पढ़ने के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी काम** भी करता म-सलन फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देता, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत करता, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता वग़ैरहा, मैं अपने **ज़ैली हल्क़े** का निगरान भी था। अपने मीठे मीठे मुर्शिद शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से मैं ने 2004 ई. में दर्से निज़ामी मुकम्मल किया। फिर तक़रीबन दो साल तक जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) में श-रफ़े तदरीस ह़ासिल रहा। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी के सदक़े (ता दमे तह़रीर) मैं **दा'वते इस्लामी** की **पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना** व **बाबुल मदीना मुशा-वरत** के साथ साथ कई मजालिस म-सलन मजलिसे जामिअ़तुल मदीना, मजलिसे दारुल इफ़्ता, मजलिसे मालियात, मजलिसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का रुक्न और तमाम जामिआ़तुल मदीना (लिल बनीन) के शो'बए ता'लीमी उमूर का ख़ादिम (निगरान) और पाकिस्तान भर के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का नाज़िम हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने अपने वालिद साह़िब की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **फ़ैज़ाने सुन्नत** से इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल पढ़ कर **आ़लिम** बनने वाले इस्लामी भाई की बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाई। हमें भी चाहिये कि अपनी औलाद और दीगर अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने की तरग़ीब दें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) मद्र-सतुल मदीना का मुदर्रिस आ़लिम कैसे बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद ह़नीफ़ अमजदी अल अ़त्तारी (उ़म्र तक़रीबन 34 साल) का बयान कुछ यूं है : मेरी उ़म्र 12 बरस थी जब मैं गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद (सोल्जर बाज़ार) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा । इज्तिमाअ़ के मनाज़िर म-सलन बयान, ज़िक्र, दुआ़ और सीखने सिखाने के ह़ल्क़े मेरे ज़ेह्न पर ऐसे नक़्श हुए कि फिर कोई और तस्वीर ख़याल में न उभर सकी । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हो गया और तरक़्क़ी की मन्ज़िलें त़ै करता करता **मद्र-सतुल मदीना** में बत़ौरे मुदर्रिस ख़िदमते दीन करने लगा। 1992 ई. में सब्ज़ मार्केट में क़ाइम होने वाले **जामिअ़तुल मदीना** का इफ़्तिताह़ हुवा तो मैं भी जामे इल्म के त़लब गारों में शामिल हो गया । मुख़्तलिफ़ जामिआ़त में राहे इल्म का सफ़र त़ै करते करते मैं फ़ारिग़ुत्तह़सील हुवा और ख़ुद को 12 माह के लिये म-दनी मर्कज़ की ख़िदमत में पेश कर दिया । बैरूने मुल्क सफ़र करने वाले **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत भी मिली । फिर कन्ज़ुल ईमान मस्जिद (बाबरी चौक बाबुल मदीना कराची) में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम देने लगा। साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी काम में भी मसरूफ़े अ़मल रहा । पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे करम के सदक़े ता दमे तह़रीर **पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना व बाबुल मदीना मुशा-वरत** के साथ साथ मुझे इस्लामी बहनों के म-दनी कामों, जामिअ़तुल मदीना लिल बनात व (बाबुल मदीना सत़्ह़ के) **मद्र-सतुल मदीना** लिल बनात

के **ख़ादिम** (निगरान) की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत हासिल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) कहां से कहां जा पहुंचा !

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर गोजरा के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद आसिफ़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 33 साल) का बयान है कि ग़ालिबन 1989 ई. की बात है कि मैं स्कूल में नवीं जमाअ़त का स्टूडन्ट था। घर में **म-दनी माह़ोल** न होने की वजह से मैं भी सुन्नतों भरे माह़ोल से दूर था। चुनान्चे नमाज़ों की पाबन्दी न करना, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना और अपना वक़्त फ़ुज़ूलियात व लग़्वियात और दीगर बुराइयों में बरबाद करना **मेरा मा'मूल** था। बड़ा अफ़्सर बनने का ख़्वाब बचपन ही से मेरी आंखों में सजा दिया गया था। चुनान्चे मैं अक्सरो बेशतर इस **ख़्वाब** की अ़-मली ता'बीर पाने की फ़िक्र में मुब्तला रहता मगर अफ़्सोस ! कि मैं फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल था, **उख़्रवी काम्याबियों** की तमन्ना से मेरा दिल एक त़रह़ से ख़ाली था। मेरी **सआ़दतों की मे'राज** का सफ़र इस त़रह़ शुरूअ़ हुवा कि मैं अपने एक दोस्त से मिलने उस के मह़ल्ले में जाया करता था। वहां मैं ने **चन्द इस्लामी भाइयों** को देखा जिन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे थे। मा'लूमात कीं तो पता चला कि येह **दा'वते इस्लामी** वाले हैं। ऐ़न शबाब में मुझे उन का येह रूप बहुत अच्छा लगा लेकिन मैं येह सोच कर उन के क़रीब होने से कतरा गया कि ना मा'लूम येह किस मक्तबए फ़िक्र के लोग हैं ? क्यूं कि जब से मैं ने होश संभाला, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वालिद साह़िब (**अल्लाह** तआ़ला उन के मरक़द पर करोड़ों

रह़मतें नाज़िल फ़रमाए) की तरबिय्यत की ब-र-कत और उ़-लमाए अहले सुन्नत دامت فیوضهم की ना'लैन के सदक़े बचपन ही से मेरे ज़ेह्न में येह बैठा हुवा था कि हम **सुन्नी** हैं, **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मानने वाले हैं जो इन का नहीं वोह हमारा नहीं, अगर्चे अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की तफ़्सीलात मुझे मा'लूम न थीं। आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ رب العزت को भी मैं बा'द नमाज़े जुमुआ़ पढ़े जाने वाले सलाम के ह़वाले से जानता था कि येह उन्हों ने लिखा है।

वक़्त यूंही गुज़रता रहा। एक दिन मैं नमाज़े अ़स्र पढ़ने के लिये **मस्जिद** में गया। बाहर निकलते वक़्त एक **आ़शिक़े रसूल** (जो मेरे शनासा थे) ने मेरी **ख़ैर ख़्वाही** करते हुए मुझे रोका और **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स में बैठने की दर-ख़्वास्त की। मैं इन्कार न कर सका और दर्स में शरीक हो गया। सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ इमामे वाले एक **इस्लामी भाई** ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना शुरूअ़ किया। जिसे सुन कर शायद मैं **पहली मर्तबा** ह़क़ीक़ी मा'नों में अपनी आख़िरत के लिये फ़िक्र मन्द हुवा। दर्स के बा'द उस इस्लामी भाई ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी, मैं ने ह़ामी भर ली। जुमा'रात को अपने दोस्त के हमराह इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा। वहां मैं ने **मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी** का बयान सुना जो बड़ा दिल नशीन और पुर तासीर था। फिर **निकल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सदाओं और रो रो कर की जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मुझे बहुत मु-तअस्सिर किया। फिर जब सब ने खड़े हो कर **सलातो सलाम** पढ़ना शुरूअ़ किया तो मैं भी शामिल हो गया। उस इज्तिमाअ़ में मौजूद नौ जवान इस्लामी भाइयों के चेहरों

की **नूरानियत, ह़या** से झुकी हुई निगाहें, सुन्नत के मुत़ाबिक़ बदन पर **सफ़ेद लिबास** और सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा** और **ज़ुल्फ़ें,** ब क़दरे ज़रूरत गुफ़्त-गू का **बा अदब अन्दाज़, ख़ुश अख़्लाक़ी** और **मिलनसारी** देख कर मुझे बड़ा रूह़ानी सुकून मिला।

कुछ दिनों के बा'द फिर उसी दोस्त के मह़ल्ले में जाना हुवा तो वहां एक इस्लामी भाई ने अपनी दुकान पर **शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **बयान का केसिट** चला रखा था। चन्द जुम्ले मेरे कान में भी पड़े, **लहजे की तासीर** कानों के रास्ते मेरे दिल में उतर गई। चुनान्चे दूसरे दिन मैं उस इस्लामी भाई की दुकान पर गया और उस से वोह **केसिट** सुनने के लिये मांगी। उस ने ब ख़ुशी दे दी। वोह केसिट ले कर मैं क़रीबी गली में अपने चचा के घर गया और मेहमान ख़ाने में अकेले बैठ कर उस केसिट के बयान को सुना जिस का नाम था **''क़ब्र की पहली रात''** जूं जूं मैं बयान सुनता गया अपने अन्दाज़े ज़िन्दगी पर नदामत बढ़ती चली गई, मुझे **आख़िरत की फ़िक्र** खाने लगी और **अश्कों के धारे** मेरे रुख़्सारों पे बह निकले। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ में कुछ ऐसी तासीर थी कि वहीं बैठे बैठे मैं ने 2 **मर्तबा** उस केसिट को सुना और येह निय्यत कर के उठा कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अब मुझे भी नेक बनना है।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **नमाज़ों** की पाबन्दी करना शुरूअ़ कर दी। इस के बा'द भी मैं ने वक़्तन फ़ वक़्तन **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयान के दीगर केसिट बयानात भी सुने। हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक होता रहा, कभी ग़ैर ह़ाज़िरी भी हो जाती।

इसी दौरान (ग़ालिबन 1993 ई में) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **सरदारआबाद** (फ़ैसलआबाद) बयान के लिये तशरीफ़ लाए। हम अपने शहर से क़ाफ़िले की सूरत में इस **इज्तिमाअ़** में शरीक हुए। मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से महब्बत तो थी मगर दिल में कुछ तरद्दुद था कि न जाने **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के बारे में इन के क्या न-ज़रियात हैं, मैं कहीं ग़लत लोगों के हत्थे तो नहीं चढ़ गया। दौराने बयान किसी आयत का तरजमा करते हुए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जब **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम बड़ी अ़क़ीदत से अल्क़ाबात के साथ कुछ इस त़रह़ लिया कि "**मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोह़रए आफ़ाक़ तर-ज-मए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान में इस आयत का तरजमा यूं करते हैं...." तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे सारे शुकूक रफ़अ़ हो गए कि **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इतनी अ़क़ीदत रखने वाला सुन्नी के सिवा कोई और नहीं हो सकता और मेरा ज़ेह्न बन गया कि अब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का दामन कभी नहीं छोड़ना (बा'द में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सदक़े ही नसीब हुईं।) फिर मैं **अ़त्तारी** भी बना और आहिस्ता आहिस्ता **म-दनी माह़ोल** के रंग में रंगता चला गया। **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत,**

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी, चौक दर्स, चौक इज्तिमाआ़त, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, इज्तिमाई ए'तिकाफ़ और बड़ी रातों के इज्तिमाआ़त में शिर्कत की ब-र-कतें लूटता रहा, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का भी सिल्सिला रहा। इस दौरान मैं B.A. कर चुका था और मज़ीद ता'लीम के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ में दाख़िले की कोशिशें कर रहा था। **फ़ैज़ाने सुन्नत** में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के पुर बहार क़लम से लिखे हुए इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के फ़ज़ाइल पढ़ कर **आ़लिम** बनने का शौक़ तो बहुत था मगर मैं घर वालों की ख़्वाहिश पूरी करने के "जज़्बे" में "**बड़ा आदमी**" बनने के लिये यहां से वहां घूमता रहा। फिर **तवज्जोहे मुर्शिद** हुई तो मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि अब मैं मज़ीद दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने के बजाए **दर्से निज़ामी** करूंगा। जब मैं ने हिम्मत कर के घर वालों से दर्से निज़ामी करने के लिये **बाबुल मदीना** कराची जाने की इजाज़त त़लब की तो मुझे ऐसा लगा कि गोया मैं ने भिड़ के छत्ते में हाथ डाल दिया हो! हर एक ने जुदागाना अन्दाज़ में बढ़ चढ़ कर मेरी **मुख़ा-लफ़त** की। ख़ानदान के "बड़ों" की एक मीटिंग भी हुई जिस में मेरी दर-ख़्वास्त का तन्क़ीदी जाएज़ा लिया गया, मैं ने उन्हें राज़ी करने की बहुत कोशिश की मगर **नाकाम रहा**। इस नाकामी ने मेरा दिल तोड़ कर रख दिया, मैं मग़्मूम व मलूल क़रीबी **मस्जिद** में पहुंच गया और **बारगाहे रिसालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में **इस्तिग़ासा** पेश किया। दिल में आई कि क्यूं न घर से भाग कर **राहे इ़ल्म** पर चलना शरूअ़ कर दूं मगर ह़िक्मत ने येह बात समझाई कि ऐसा करने से मेरी प्यारी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर उंगलियां

उठेंगी और येह मुझे हरगिज़ गवारा न होगा। लिहाज़ा ! मैं ने ख़ुद पर क़ाबू पा लिया।

ग़ालिबन 1996 में हमारे शहर से **इस्लामी भाइयों** का एक क़ाफ़िला बाबुल मदीना कराची के बाबुल इस्लाम सिन्ध सत्ह पर होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक होने के लिये रवाना हुवा। घर वालों से इजाज़त ले कर मैं भी **आ़शिक़ाने रसूल** के इस क़ाफ़िले का हिस्सा बन गया। **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत के इलावा मेरी येह भी निय्यत थी कि मैं अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों **सब्ज़ सब्ज़ इमामा** अपने सर पर सजाऊंगा (दाढ़ी शरीफ़ पहले ही से चेहरे पर मौजूद थी) और उन्हें **दर्से निज़ामी** के लिये अपने शौक़ और इस में ह़ाइल रुकावटों के बारे में बता कर मदद की दर-ख़्वास्त करूंगा फिर **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **जो हुक्म इर्शाद फ़रमाएंगे उस पर सख़्ती से अ़मल करूंगा**। चुनान्चे मैं ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम एक **त़वील मक्तूब** लिखा और बाबुल मदीना पहुंचने के बा'द आप के शहज़ादे अलह़ाज मौलाना **अह़मद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी** مدظله العالی (जो उन दिनों कमसिन थे) के ज़रीए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को भिजवाया। किसी सबब से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों इमामा शरीफ़ सर पर सजाने की ख़्वाहिश पूरी न हो सकी, चुनान्चे मैं ने **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों से मस होने (या'नी छू जाने) वाले सब्ज़ सब्ज़ **इमामे शरीफ़** को ही अपने सर पर सजा लिया। **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत के बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में पहली मर्तबा ह़ाज़िरी हुई तो मैं ने

मक्तूब के **जवाब** के लिये लिख कर अ़र्ज़ की। **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इशारों से बताया कि जवाबी मक्तूब ब ज़रीअ़ए डाक भेज दिया गया है। मैं बाबुल मदीना कराची की पुरकैफ़ फ़ज़ाओं से रुख़्सत हो कर अपने अ़लाक़े में पहुंचा तो **जवाबी मक्तूब** मेरा मुन्तज़िर था। धड़कते दिल के साथ मक्तूब पढ़ना शुरूअ़ किया तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने लिखा था : **"आप के जज़्बात लाइक़े तह़सीन हैं मगर मैं आप को वालिदैन की इताअ़त का मश्वरा देता हूं।"** इस के बा'द मजीद नसीह़तें और नेक आ'माल करने की तरग़ीबें थी येह ख़त़ पढ़ने के बा'द मैं ने **मुर्शिद के फ़रमान** पर अपनी ख़्वाहिश को **कुरबान** कर दिया और येह ज़ेह्न बना लिया कि वालिदैन इजाज़त देंगे तो ही दर्से निज़ामी करने जाऊंगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुर्शिद की **बात मानने की ब-र-कत** से एक या दो साल के अन्दर अन्दर घर वालों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर मुझे **दर्से निज़ामी** करने के लिये **बाबुल मदीना** कराची जाने की इजाज़त दे दी। मेरे तो मन की मुराद बर आई, मैं ख़ुशी से फूले न समाता था। मैं मदी-नतुल मुर्शिद बाबुल मदिना कराची पहुंचा और **जामिअ़तुल मदीना** (गोधरा कॉलोनी न्यू कराची) में दाख़िला ले कर **इल्मे दीन** सीखने में लग गया। द-र-जए ऊला मुकम्मल होने को था कि शदीद बीमार होने की वजह से मुझे बाबुल मदीना कराची को ख़ैरआबाद कहना पड़ा। इस दौरान जामिअ़तुल मदीना न्यू कराची से गुलिस्ताने जौहर मुन्तक़िल हो चुका था। **शहरे मुर्शिद** से दूर होने पर आहें भरता हुवा नमनाक आंखों के साथ **जामिअ़तुल मदीना** (गुलिस्ताने जौहर बाबुल मदीना) के दरो दीवार चूम कर घर वापस आ गया। कुछ अ़र्सा घर पर रह

कर इ़लाज करवाया फिर ता'लीम जारी रखने की ग़रज़ से **जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना मर्कज़ुल औलिया** लाहोर जा पहुंचा। यहां मेरे **असातिज़ए किराम** دامت فیوضھم ने मेरे साथ इ़ल्मी व माली तौ़र पर बहुत तआ़वुन किया। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। मर्कज़ुल औलिया लाहोर में **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता एक आ़लिमे दीन के पास द-र-जए सादिसा (या'नी छटे द-रजे) तक पढ़ने के बाद ज़हे किस्मत दोबारा **बाबुल मदीना** कराची आना नसीब हो गया। पढ़ने के साथ साथ मैं पढ़ाना भी शुरूअ़ कर चुका था। यहां मैं ने **जामिअ़तुल मदीना** (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना) में दर्से निज़ामी मुकम्मल किया और 2004 ई. में मेरे सोहने सोहने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دامت برکاتہم العالیہ ने हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अपने मुबारक हाथों से मुझ गुनहगार के सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ की सूरत में सजाई। (ता दमे तह़रीर 2008 ई.) तक़रीबन 7 साल तक **जामिअ़तुल मदीना** में बतौ़रे मुदर्रिस ख़िदमत सर अन्जाम देने के इ़लावा मुझे **दा'वते इस्लामी** के इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती इदारे **अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या** (बाबुल मदीना कराची) में शो'बा ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से तक़रीबन 4 साल से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत और **मजलिसे म-दनी मुज़ाकरा व मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या** (**दा'वते इस्लामी**) की रुक्निय्यत ह़ासिल है। इस के इ़लावा भी मेरे मुर्शिदे करीम **अमीरे अहले सुन्नत** دامت برکاتہم العالیہ, मेरी म-दनी तह़रीक **दावते इस्लामी** ने मुझे क्या कुछ नहीं दिया है बस इतना समझ लीजिये कि मैं फ़र्शे ज़िल्लत पर औंधे मुंह पड़ा ख़ाक चाट रहा था, मेरे मुर्शिद ने मुझे वहां

से उठा कर तख़्ते इ़ज़्ज़त पर ला बिठाया है।

ख़ाक मुझ में कमाल रखा है
मुर्शिदी ने संभाल रखा है

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे वोह घर वाले जो पहले मुझे दर्से निज़ामी की इजाज़त देने के लिये तय्यार नहीं थे आज मेरी सआ़दतों पर रश्क करते हैं। **अल्लाह** तआ़ला मुझे, मेरे अहले ख़ाना, मेरी आने वाली नस्लों को शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी और **दा'वते इस्लामी** पर **इस्तिक़ामत** और बरोज़े महशर इन की **शफ़ाअ़त** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

गिर पड़ के यहां पहुंचा, मर मर के इसे पाया
छूटे न इलाही ! अब, सांगे दरे जाना नां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** से मु-तअस्सिर हो कर **म-दनी माहोल** से वाबस्ता होने वाला वोह नौ जवान जिस ने अपनी आंखों में दुन्यावी त़ौर पर "बड़ा अफ़्सर" बनने के ख़्वाब सजा रखे थे, दीनी अफ़्सर (या'नी आ़लिम) बन गया। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन्क़िलाबी बयान **"क़ब्र की पहली रात"** ने उस नौ जवान की ज़िन्दगी का रुख़ तब्दील कर दिया और वोह **अ़त्तारी** बन कर **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** में मस्रूफ़ हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़बान में **अल्लाह** तआ़ला ने बहुत तासीर अ़त़ा फ़रमाई है। आप

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **सुन्नतों भरे इस्लाही बयानात** को सुनने वालों की महविय्यत का आ़लम क़ाबिले दीद होता है। तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी और सूबाई सत्ह़ के **इज्तिमाआ़त** में बयक वक़्त लाखों मुसल्मान आप के बयान से मुस्तफ़ीज़ होते हैं, ब ज़रीअ़ए टेलीफ़ोन और इन्टरनेट, बयान सुनने वालों की ता'दाद इस के इ़लावा है। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि आप के बयानात ब ज़रीअ़ए **केसिट** घरों, दुकानों, मसाजिद, जामिआ़त वग़ैरा में भी निहायत शौक़ से सुने जाते हैं। बयानात की इन **केसिटों** और सीडीज़ (CD's) को **मक-त-बतुल मदीना** शाएअ़ करता है। आप का **अन्दाज़े बयान** बेह़द सादा और आ़म फ़हम और त़रीक़ए तफ़्हीम ऐसा हमदर्दाना होता है कि सुनने वाले के दिल में तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो जाता है। **लाखों मुसल्मान** आप के बयानात की ब-र-कत से **ताइब** हो कर राहे रास्त पर आ चुके हैं। हमें भी चाहिये कि इस्लामी भाइयों को मक-त-बतुल मदीना से जारी होने वाले बयानात के केसिट और VCD's देखने और सुनने की तरग़ीब दिलाएं बल्कि सुनने की दर-ख़्वास्त कर के उस को बयान की केसिट पेश कर दी जाए, और वोह सुन ले तो वापस ले कर दूसरी दी जाए। और जहां तक मुम्किन हो बयान की केसिटें दे कर बदले में उन से गानों की केसिटें ले कर डब करवा कर मज़ीद आगे बढ़ा देनी चाहियें, इस त़रह़ कुछ न कुछ गुनाहों भरी केसिटों का اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा होगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बहार से येह भी मा'लूम हुवा कि **मुर्शिद के फ़रमान पर अपनी ख़्वाहिश कुरबान**

करने वाले के काम्याबी क़दम चूमती है । आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : (मुरीद) उस के (या'नी अपने पीर के) हाथ में मुर्दा ब दस्ते ज़िन्दा हो कर रहे । (फ़तावा अफ़्रीक़ा, 140) हमें भी चाहिये कि अपने मुर्शिद के ह़क़ में ऐसे बन जाएं जैसे **मुर्दा ब दस्ते ज़िन्दा** होता है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) बद मज़्हबों के चुंगल से छूट गए

मदी-नतुल औलिया मुलतान के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद जुल फ़िक़ार अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) के ह़लफ़िया बयान का ख़ुलासा है कि हमारा घराना सुन्नी तो था मगर अ़क़ाइद के बारे में ज़रूरी मा'लूमात न होने की वजह से मेरे दो भाई बद मज़्हबों के चुंगल में फंस गए । मैं भी डांवां डोल होने लगा । कमज़ोर पड़ता देख कर तब्लीग़े दीन के नाम पर बद मज़्हब लोग मेरे घर आ धमके और ता'लीम शुरूअ़ कर दी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ पे करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए कि आप की बनाई हुई तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता एक मुबल्लिग़ ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और मुझे **दा'वते इस्लामी** के तह़्त होने वाले **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में शिर्कत की दा'वत दी जिस पर **लब्बैक** कहते हुए मैं यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ में शरीक हुवा । फिर उन्हों ने मुझे हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी । पहली बार तो मैं ने मा'ज़िरत कर ली मगर उन के बार बार दा'वत देने पर मैं ने उन से कहा : मुझे एक पोशीदा बीमारी है

(जो अब मुझे ख़ुद भी याद नहीं) अगर तुम और तुम्हारे पीर साहिब (या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) उस का **इलाज** कर दें तो मैं इज्तिमाअ़ में ज़रूर शिर्कत करूंगा।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! उसी रात **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए। **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुझे एक वसीअ़ व अ़रीज़ मैदान में ले गए जहां एक बहुत बड़ा घनी छाउं वाला दरख़्त भी था। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझ से फ़रमाया : यहां हमारा तीन रोज़ा **बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** होगा, आप भी इस में शिर्कत कीजियेगा। फिर फ़रमाया : अब बताइये कि आप को क्या परेशानी है, मैंने जेब से एक पर्चा निकाला जिस पर वोह बीमारी लिखी हुई थी और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को पढ़ कर सुनाया। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मेरे कन्धे पर शफ़्क़त से हाथ रखा और तसल्ली देते हुए फ़रमाया : اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ सुब्ह होते ही आप की येह बीमारी दूर हो जाएगी और आप हमेशा के लिये इसे **भूल** भी जाएंगे ताकि आप को कभी नदामत न उठानी पड़े।" जब सुब्ह मैं बेदार हुवा तो **हलफ़िया** कहता हूं कि मेरी बीमारी दूर हो चुकी थी। फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कहने के मुताबिक़ मैं उस बीमारी को **भूल** भी गया। तादमे तहरीर मुझे याद नहीं कि वोह कौन सी बीमारी थी। इस वाक़िए़ से मैं इतना मु-तअस्सिर हुवा कि मैं न सिर्फ़ **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा बल्कि बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में भी शामिल हुवा। मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामन से वाबस्ता हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया और **नेकी की**

दा'वत की धूमें मचाने लगा। मेरे दोनों भाइयों ने भी बुरे अ़क़ाइद से **तौबा** कर ली बल्कि एक तो **म-दनी माहोल** में भी शामिल हो गए।

दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** की ब-र-कत से दीनी कुतुब के मुता-लए का शौक़ हुवा। फिर मेरा **दर्से निज़ामी** करने का ज़ेह्न बना। चुनान्चे मैं ने 1999 ई. में **जामिअ़तुल मदीना** फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में दाख़िला ले लिया। 2006 ई. में फ़ारिग़ुत्तह़सील हुवा और **दा'वते इस्लामी** के आ-लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों दस्तार बन्दी का शरफ़ पाया। (ता दमे तह़रीर) एक मस्जिद में इमामत के मन्सब के साथ साथ मुझे ज़ैली सत्ह़ पर **म-दनी इन्आ़मात की ज़िम्मादारी** भी मिली हुई है। इ़लावा अज़ीं मैं **दा'वते इस्लामी** के इदारे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या में इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी कामों में मसरूफ़ हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने किस त़रह़ एक मुसल्मान का ईमान लुटने से बचाया। मज़्कूरा इस्लामी भाई न सिर्फ़ बद मज़हबों से मह़फ़ूज़ रहे बल्कि आ़लिम बनने के बा'द तह़रीर व तालीफ़ जैसे अ़ज़ीम काम में लग गए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) फ़िल्म बीनी का शौक़ीन, आ़लिम कैसे बना ?

बाबुल मदीना कराची के एक म-दनी इस्लामी भाई मुह़म्मद अशरफ़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 32 साल) अपनी दास्ताने इ़शरत के ख़ातिमे के अह़वाल कुछ यूं बयान करते हैं : **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने से पहले मैं गुनाहों की वादी में सरगर्दां था। अफ़्सोस ! कि मेरा उठना बैठना भी ऐसे लोगों में था जो त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुलव्वस थे। हम सब दोस्त मिल कर **फ़िल्में** देखा करते थे। ऐसी ही एक शाम थी, मैं अपने दोस्त के घर से फ़िल्म देख कर घर की त़रफ़ रवां दवां था कि रास्ते में सब्ज़ इमामे वाले एक इस्लामी भाई ने मुझे रोक लिया और **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **आ़शिक़ाने रसूल** के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की दर-ख़्वास्त की। मैंने नफ़्स की पुकार पर बहाना बनाते हुए कहा : मैं अकेला कैसे जाऊं, मेरा कोई दोस्त भी तो साथ हो। उस इस्लामी भाई ने मिठास से तर बतर लहजे में जवाब दिया : **मैं हूं ना आप का दोस्त**। उन का मह़ब्बत भरा अन्दाज़ देख कर मुझ से **इन्कार** न हो सका। चुनान्चे मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर बन गया। **म-दनी क़ाफ़िले** में मेरे शबो रोज़ इ़बादत में गुज़रे, मैं गुनाहों की आलूदगी से दूर रहा। **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र मेरे कानों में रस घोलने लगा। मेरे दिलो दिमाग़ को **ताज़गी** मिली। आख़िरी दिन जब रुख़्सत से पहले इख़्तितामी दुआ़ मांगी गई तो मेरी आंखों की वादियों से **आंसूओं** के चश्मे बहने लगे। मैंने अपने गुनाहों से **तौबा** की

और अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ **इमामा शरीफ़** सजा लिया। म-दनी क़ाफ़िले से वापस आने के बा'द मैं ने बुरे दोस्तों की सोह़बत से कनारा कशी इख़्तियार कर ली और मेरे शबो रोज़ **दा'वते इस्लामी** के पाकीज़ा **म-दनी माह़ोल** में बसर होने लगे। फिर फ़ैज़ाने मुर्शिद की बारिश मुझ पर छमाछम बरसी और मैं ने **जामिअ़तुल मदीना** बाबुल मदीना कराची के शो'बए दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लिया। सि. 2000 ई. में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों दस्तारे फ़ज़ीलत अपने सर पर सजाई। (ता दमे तह़रीर) मुझे **जामिअ़तुल मदीना** में तदरीस करते हुए तक़रीबन 11 साल हो गए हैं। इस के साथ साथ डिवीज़न मुशा-वरत में राबित़ा बिल उ़-लमा वल मशाइख़ की ज़िम्मादारी भी मिली हुई है।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम, दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी झोली भर दे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से फ़िल्म बीनी का शौक़ीन नौ जवान, दीनी कुतुब के मुत़ा-लए़ का शौक़ीन बन गया और न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि दूसरों को इ़ल्मे दीन सिखाने वाला बन गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) अमीरे अहले सुन्नत ने मेरा ईमान बरबाद होने से बचा लिया

रावल पिन्डी (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई नदीम अशरफ़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 34 साल) का बयान कुछ यूं है : मैं नवीं जमाअ़त का त़ालिबे इ़ल्म था। हमारे अ़लाक़े में एक ही मस्जिद थी जो बद मज़हबों की थी। **अ़क़ाइद** के बारे में दुरुस्त मा'लूमात न होने की वजह से मैं उन्ही की मस्जिद में नमाज़ की अदाएगी के लिये जाया करता। एक मर्तबा उन के किसी फ़र्द ने मुझे रोका कि अभी हमारी ता'लीम होगी, इस में तुम भी बैठो ! मैं बैठ गया। फिर वोह गश्त पर निकले तो मैं भी उन के साथ था। मैं उन के इज्तिमाअ़ में भी गया। अ़क़ाइद में ना पुख़्तगी की वजह से मैं उन्हें अच्छा समझने लगा। मगर मुझे क्या मा'लूम था कि येह नाम निहाद लोग मेरे ईमान के दर पै हो चुके हैं। मेरी ख़ुश क़िस्मती कि कुछ ही अ़र्से बा'द हम ने वोह अ़लाक़ा छोड़ कर किसी और जगह रिहाइश इख़्तियार कर ली। वहां एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गया तो सब्ज़ इमामा शरीफ़ वाले **एक इस्लामी भाई** से मुलाक़ात हुई। उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी। मैं इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा। वहां पर सुन्नतों भरा बयान सुना, इजतिमाई त़ौर पर ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ किया, रिक़्क़त अंगेज़ **दुआ** में शिर्कत की। जब मैं वहां से लौटा तो मेरा दिल अगर्चे **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ माइल हो चुका था, मगर में शशो पंज का शिकार था कि न जाने वोह लोग सह़ीह़ हैं या **दा'वते इस्लामी** वाले। चुनान्चे एक अ़र्से तक मैं दो कश्तियों का सुवार बना रहा। मुख़्तलिफ़ किताबों का

मुत़ा-लआ़ भी किया मगर किसी ह़त्मी नतीजे तक न पहुंच पाता। एक रात मैं सोया तो मेरा नसीब चमक उठा। **शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मेरे **ख़्वाब** में तशरीफ़ ले आए और मुझे अपने क़दम मुबारक से हल्की सी ठोकर रसीद की। सुब्ह़ जब मैं बेदार हुवा तो मुआ़-मला कुछ कुछ मेरी समझ में आ चुका था। फिर मैं ने अपने अ़लाक़ाई निगरान को ख़्वाब सुनाया तो उन्हों ने भी फ़रमाया : कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ग़ालिबन आप को **दा'वते इस्लामी** के ह़वाले से يَكْ دَرْ گِيْر مُحْكَمْ گِيْر (या'नी एक दरवाज़ा पकड़ो और मज़बूती के साथ पकड़ो) की ताकीद फ़रमा रहे थे। उस दिन के बा'द मैं उन बद अ़क़ीदा लोगों के साए से भी दूर भागने लगा। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया।

फिर मैं सि. 1996 ई. में बाबुल मदीना कराची पहुंचा और **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना (गोधरा कॉलोनी बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला ले लिया। दर्से निज़ामी के दौरान एक मस्जिद में इमामत की भी सआ़दत मिली। **अ़लाक़ाई मुशा-वरत** में म-दनी इन्आ़मात का ज़िम्मादार भी रहा। **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देता और **अ़लाक़ाई दौरा बराए** नेकी की दा'वत में भी शरीक होता था। फ़ारिग़ुत्तह़सील होने पर हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने हाथों से दस्तारे फ़ज़ीलत (ब सूरते सब्ज़ इमामा शरीफ़) मेरे सर पर सजाई। इस के बा'द दो साल तक मैं इमामत करता रहा। इस दौरान **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** भी किया। फिर मुफ़्तिये **दा'वते**

इस्लामी अलहाज, अल हाफ़िज़ अल क़ारी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू उ़मर मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عليه رحمة الله الغنى की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **दा'वते इस्लामी** के इदारे **अल मदी-नतुल इल्मिय्या** से वाबस्ता हो गया। ता दमे तह़रीर अल मदी-नतुल इल्मिय्या के शो'बा (तख़्रीज) के ज़िम्मादार की हैसिय्यत से ख़िदमते दीन में मसरूफ़ हूं। **अल्लाह** तआ़ला मेरे पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دامت برکاتهم العالیه और आप की बनाई हुई तह़रीक **दा'वते इस्लामी** को सलामत रखे कि इन्ही के तुफ़ैल **मेरा ईमान बरबाद होने से बच गया।**

अल्लाह* عزوجل *की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ालात कैसे ना गुफ़्ता बेह हैं। अगर हम ने **इन्फ़िरादी कोशिश** में सुस्ती की तो कहीं ऐसा न हो कि इस्लाम दुश्मन त़ाक़तें अपने मज़्मूम मक़ासिद में काम्याब हो जाएं और कोई सादा लौह़ मुसल्मान अपने ईमान से हाथ धो बैठे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15) वीडियो गेम्ज़ के शौक़ीन की तौबा

ज़ियाकोट (सियाल कोट, पाकिस्तान) की तह़सील सम्बड़ियाल के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद नसीर अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) ने अपनी **तौबा** के अह़वाल कुछ यूं बयान किये कि मैं ने जब से होश संभाला घर में **फ़िल्में डिरामे** देखने का माह़ोल पाया। चुनान्चे मैं भी इसी रंग में रंग गया। फ़िल्में देखने का ऐसा चस्का चढ़ा कि एक रात में चार चार फ़िल्में देखता और डिरामों का तो ऐसा शौक़ीन था कि टीवी पर

चलने वाला कोई भी डिरामा देखे बिग़ैर चैन न आता। स्कूल से वापस आ कर वीडियो गेम्ज़ की दुकान में घुसा रहता, जहां के मुख़र्रिबे अख़्लाक़ माहोल ने मुझे मज़ीद बिगाड़ दिया। क्या सुब्ह़ क्या शाम गुनाहों के सिवा मेरा कुछ काम न था। मैं बड़ा ख़ुश था कि ख़ूब मज़े की ज़िन्दगी बसर हो रही है। मगर आह ! मुझे नहीं मा'लूम था कि येह ऐश कोशियां मेरी आख़िरत बरबाद कर रही हैं। मेरी बरबाद जवानी नेकियों से इस त़रह़ आबाद होना शुरूअ़ हुई कि र-मज़ानुल मुबारक में हमारे क़रीबी गाउं के एक नौजवान (जो क्लीन शेव था) ने **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में दस दिन का इज्तिमाई ए'तिकाफ़ किया। जब वोह वहां से लौटा तो उस के सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ था। और चेहरे पर दाढ़ी नुमूदार हो चुकी थी। वोह इस्लामी भाई हमारे गाउं में भी तशरीफ़ लाते और मुझे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दिया करते। वोह 12 माह तक तक़रीबन हर जुमा'रात इज्तिमाअ़ में शरीक होने की तरग़ीब देते मगर मैं कतरा कर निकल जाता। बल्कि एक दिन तो मेरे वालिद ने उस भले मानस मुबल्लिग़ को ख़ूब सुनाईं कि मेरे बेटे को इज्तिमाअ़ की दा'वत न दिया करो, मैं इसे किसी मज़हबी तन्ज़ीम से वाबस्ता नहीं होने दूंगा मगर वोह मुबल्लिग़ तै़श में आने के बजाए ख़मोश रहे।

वक़्त गुज़रता रहा ह़त्ता कि र-मज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना तशरीफ़ ले आया। उसी इस्लामी भाई ने मुझे **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ का तआ़रुफ़ करवाया और मुझे भी शरीक होने की दा'वत दी। मुझे कभी ए'तिकाफ़ में बैठने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुवा था। उन की बातें सुन कर एक दम मेरे दिल

में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शरीक होने का शौक़ पैदा हुवा। चुनान्चे मैं ने उन से हां कर दी। वोह इस्लामी भाई 20 र-मज़ानुल मुबारक को मुझे लेने के लिये मेरे घर पहुंच गए और ज़ादे ए'तिकाफ़ तय्यार करने में मेरी मदद की। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! उस इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से मैं ज़ियाकोट में अबू ह़नीफ़ा मस्जिद (म्रे कॉलिज रोड) में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शरीक हो गया। दौराने ए'तिकाफ़ होने वाले रिक़्क़त अंगेज़ बयानात और पुरसोज़ दुआ़ओं ने मेरे दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्अ़ रोशन कर दी। मुझे **तौबा** नसीब हुई और मैं ने पुख़्ता अ़ज़्म कर लिया कि अब ता ह़यात **दा'वते इस्लामी** के महके महके **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता रहूंगा। यूं मैं **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर सुन्नतों की ख़िदमत करने लगा। इस दौरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दामने करम से वाबस्ता हो कर अ़त्तारी बन गया। फिर मुझ पर एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** की और **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने के लिये मेरा ज़ेह्न बनाया। मैं सि. 1998 ई. में घर वालों से इजाज़त लेने के बा'द **बाबुल मदीना** कराची आ गया। और **जामिअ़तुल मदीना** (फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ गुलिस्ताने जौहर) में दाख़िला लिया। सि. 2005 ई. सि. 1426 हि. में फ़ारिगुत्तह़सील होने के बा'द **दा'वते इस्लामी** के **जामिअ़तुल मदीना** (ज़ियाकोट) में एक साल तक तदरीस करने की सआ़दत पाई। इस वक़्त मैं **जामिआ़तुल मदीना** पंजाब ज़ियाई का **सूबाई ख़ादिम** (ज़िम्मादार) हूं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ पर

करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों कि जिन के दामने करम से वाबस्ता होने की ब-र-कत से जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में मुब्तला नौ जवान **जन्नत में ले जाने वाले आ'माल** करने में मश्ग़ूल हो गया।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि एक मुबल्लिग़ की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** ने एक नौ जवान को अपनी जवानी बरबाद करने से बचा लिया। वोह नौ जवान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से न सिर्फ़ आ़लिम् बल्कि आ़लिम गर बन गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(16) करा़टे का माहिर, आ़लिम कैसे बना ?

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद मुजाहिद अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 40 साल) के ह़लफ़िया बयान का लुब्बे लुबाब है : **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने से पहले मैं फ़ेशन परस्त नौ जवान था। मैं करा़टे का **माहिर** था लिहाज़ा लड़ाई झगड़े में पेश पेश होता था। अफ़्सोस ! कि मैं **ज़ुल्म के अन्जाम** से बे ख़बर था। **राहे तौबा** पर मेरे सफ़र का आग़ाज़ कुछ इस त़रह़ हुवा कि ग़ालिबन सि. 1987 ई. में मेरे एक रिश्तेदार इस्लामी भाई (जो ख़ुद भी नए नए **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए थे) ने मुझे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे**

इज्तिमाअ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ दा'वत दी बल्कि जुमा'रात को मुझे इज्तिमाअ़ में ले जाने के लिये मेरे घर पहुंच गए। यूं मैं ने गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद (बाबुल मदीना कराची) में जुमा'रात को होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की। **शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने उसी वक़्त अपने गुनाहों से तौबा की। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त कर के अ़त्तारी भी बन गया और **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने लगा। मेरे वालिद साह़िब मुझे 12 साल की उ़म्र में अपने पीर साह़िब के पास बैअ़त करवाने के लिये ले कर गए थे तो उन्हों ने येह कह कर बैअ़त करने से इन्कार कर दिया कि **येह किसी और का है**। ता दमे तह़रीर मैं **अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या** में ख़िदमात सर अन्जाम दे रहा हूं। इ़लावा अज़ीं मुझे **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ बनाए गए डिवीज़न में बत़ौरे **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** और बाबुल मदीना की **मजलिसे राबित़ा बिल उ़-लमा व मशाइख़** के रुक्न के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल है।

*तुम **दा'वते इस्लामी** को जानते हो क्या है*
फ़ैज़ाने मदीना है फ़ैज़ाने मदीना है

अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अपने रिश्तेदार इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने वाले इस म-दनी इस्लामी भाई को कैसी ब-र-कतें नसीब हुईं । हमें भी चाहिये कि जहां हम दीगर मुसल्मानों को नेकी की दा'वत पेश करते हैं वहीं अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर भी इन्फ़िरादी कोशिश किया करें ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) सआ़दतों की मे'राज की दास्तान

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक क़रीबी शहर नारंग मन्डी के इस्लामी भाई नूरुल मुस्त़फ़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 31 साल) का बयान कुछ यूं है : मैं एक स्कूल में पढ़ता था। हमारा घराना पक्का सुन्नी, क़दरे मज़हबी और दुन्यावी ए'तिबार से ता'लीम याफ़्ता था। वालिद साह़िब को मुत़ा-लए़ का बहुत शौक़ था। यूं मुत़ा-लए़ का ज़ौक़ और सुन्नियत का शऊ़र गोया मुझे विरसे में मिला। ज़ौक़े इ़ल्मी व शऊ़रे सुन्नियत के इस इम्तिज़ाज ने मुझे लड़कपन ही में **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की अ़-ज़मत व रिफ़्अ़त से आश्ना कर दिया। यूं मैं बड़ी मह़ब्बत व अ़क़ीदत से सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के दरयूज़ा गरों में शामिल हो गया। फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ब-र-कत से मैं उ़-लमाए अहले सुन्नत كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से बड़ी मह़ब्बत करता था और बद मज़हबों से सख़्त मु-तनफ़्फ़िर था।

हमारे मह़ल्ले की मस्जिद में एक **सब्ज़ इमामे** वाले साह़िब बत़ौरे ख़ादिम या मुअज़्ज़िन आए। वोह हमारे साथ बड़ी मिलनसारी से मुलाक़ात किया करते। एक मर्तबा उन्हों ने मुझे "**मदीने की धूल**" नामी (जेबी साइज़ की) ना'तों की किताब

तोह़फ़े में दी। उस में कुछ आसान और मुख़्तसर **वज़ीफ़े** भी लिखे हुए थे। मैं ने उस में से तीन वज़ाइफ़ मुन्तख़ब किये। ता दमे तह़रीर भी उन की उ़मूमन पाबन्दी करता हूं। मगर इत्तिफ़ाक़ देखिये कि इस के मुअल्लिफ़ के बारे में मुझे कुछ मा'लूम न था। मुझे फ़िक़्ही मसाइल में भी दिल चस्पी थी। एक मर्तबा एक किताब इन्तिहाई ख़स्ता ह़ालत में न जाने कहां से दस्त-याब हुई। नाम देखा तो "नमाज़ का जाएज़ा", मैं ने फ़ौरन पढ़ डाली और उसी वक़्त अपनी नमाज़ दुरुस्त कर ली। इस किताब से नमाज़ के इ़लावा दीगर कई मसाइल जो अ़वाम में ग़लत़ मशहूर थे, मा'लूम हुए। ख़ुसूसन एक मस्अला मुझे अब तक याद है जिसे पढ़ कर मैं सब को बताता फिरता था कि बच्चे के पेशाब को पाक समझने का मस्अला ग़लत़ है, दुरुस्त मस्अला येह है कि बच्चे का पेशाब भी नापाक होता है चाहे वोह एक दिन का ही हो। ग़ालिबन इसी किताब से सीख कर मैं लोगों को दुरुस्त वुज़ू करना भी सिखाया करता था।

मेट्रिक के बा'द मैं ने लाहोर के एक कॉलिज में दाख़िला लिया। उसी कॉलेज से मुल्हिक़ हॉस्टल में मेरी रिहाइश थी। एक कमरे में हम चार नौ जवान रहते थे। पढ़ाई के इ़लावा आपस में हमारी बह़सें होती रहती थीं। एक बार हमारे दरमियान येह बह़स छिड़ गई कि सुरमा डालना सुन्नत तो है मगर इस का सुन्नत त़रीक़ा क्या है? मैं ने कहा कि मैं जुमुआ़ की छुट्टी में घर जाऊंगा और अपने शहर की मर्कज़ी मस्जिद के ख़त़ीब साह़िब से पूछ कर आऊंगा। चुनान्चे मैं घर पहुंचा और अपने शहर की मर्कज़ी जामेअ़ मस्जिद में जुमुए़ की नमाज़ अदा करने के बा'द ख़त़ीब साह़िब से मिला और उन से **सुरमा डालने की सुन्नत** के बारे

में इस्तिफ़्सार किया । उन्हों ने निहायत शफ़्क़त से फ़रमाया, ''क्या मैं आप को एक ऐसी किताब न दूं जिस में सुरमे के साथ साथ म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और भी बहुत सी सुन्नतों का बयान है । आप जब तक चाहो इस का मुता-लआ़ करो और जब चाहो वापस कर देना ।'' मैं तवक़्क़ोअ़ से बढ़ कर नवाज़िश पर बहुत ख़ुश हुवा । उन्हों ने एक ख़ादिम को आवाज़ दी : ''भाई वहां से **फ़ैज़ाने सुन्नत** लाना ।'' ख़ादिम ने वोह किताब बड़ी अ़क़ीदत से ला कर उन की ख़िदमत में पेश कर दी । क़िब्ला ख़तीब साहिब ने वोह किताब ली और उसे बोसा देते हुए अश्कबार हो गए और क़रीब मौजूद एक साहिब (जो मस्जिद के लिये फ़ी सबीलिल्लाह इलेक्ट्रीशनर का काम किया करते थे) से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया, ''**मौलाना इल्यास क़ादिरी साहिब के एहसानात का बदला कौन चुका सकता है ?**'' जवाबन उन साहिब ने भी हां में हां मिलाते हुए कहा : ''**वाक़ेई, येह सुन्निय्यत का बहुत काम कर रहे हैं ।**'' येह अल्फ़ाज़ मेरे ज़ेहन में नक़्श हो गए । मगर उस वक़्त न तो मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाक़िफ़ था और न उन के एहसानात से ।'' बहर हाल मैं ने उन से ख़ुशी ख़ुशी **फ़ैज़ाने सुन्नत** ली और ले जा कर बड़े शौक़ से अपने रूम मेट (या'नी हम मक्तब) दोस्तों को उस का कुछ हिस्सा पढ़ कर सुनाया । इस किताब के सादा मगर पुर कशिश अन्दाज़े बयां ने सब को ऐसा मस्हूर किया कि जब कभी हम इस किताब को ले कर बैठते तो एक ही निशस्त में **कई कई सफ़हात** पढ़ लेते । कई बार ऐसा भी हुवा कि हमारी आंखें अश्कबार हो जाया करतीं । बिल ख़ुसूस जब मैं ने दाढ़ी रखने से मु-तअ़ल्लिक़ बाब का मुता-लआ़ किया तो **अमीरे अहले सुन्नत**

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ह़कीमाना अन्दाज़ ने म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का ऐसा जज़्बा दिया कि मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन जुम्लों के साथ ही साथ ह़ामी भर ली कि **"गरदन तो कट सकती है मगर दाढ़ी नहीं....."** और फिर **"शाबाश.....शाबाश.....शाबाश"** के इख़्तिामी अल्फ़ाज़ ने रूह़ानी त़ौर पर ऐसी पीठ थपकी और वोह हिम्मत मज़्बूत़ की, कि फिर कोई रुकावट दाढ़ी रखने में कभी आड़े न आ सकी ख़्वाह वोह रिश्तेदारों की सख़्तियां थीं या कॉलिज के क्लास फ़ीलोज़ की फब्तियां। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने चेहरे को सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आरास्ता कर लिया। मगर वाए अफ़्सोस कि जिन की रूह़ानी तवज्जोह ने यहां तक पहुंचा दिया अभी तक उन का कोई ख़ात़िर ख़्वाह तआ़रुफ़ न हो सका। फिर एक रिसाला बनाम **"पुर असरार भिकारी"** कहीं से हाथ लगा, पढ़ा तो बहुत मु-तअस्सिर कुन पाया। मेरे एक हम मक्तब ने बताया कि जिन का येह रिसाला है उन की एक तह़रीक भी है जिस का (सोडीवाल क्वॉटर की ह़-नफ़िय्या मस्जिद में) इज्तिमाअ़ भी होता है और इज्तिमाअ़ के बा'द वोह लोग ह़ल्क़े बना कर दुआ़एं और सुन्नतें याद करते हैं।

हम ने प्रोग्राम बनाया की किसी दिन इज्तिमाअ़ में चलेंगे। कई हफ़्ते गुज़र गए मगर कोई न गया। बिल आख़िर एक जुमा'रात मैं अकेला ही निकल गया। जब मैं इज्तिमागाह के स्टॉप पर वेगन से उतरा तो क़दम बाहर रखते ही **सलातो सलाम** पढ़ने के प्यारे प्यारे मानूस अल्फ़ाज़ मेरे कानों में रस घोलने लगे। देखा तो सब्ज़ इमामे और सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस एक नौ जवान अपने जैसे कुछ

नौ जवानों से थोड़ा आगे हो कर बुलन्द आवाज़ से पुकार रहा था, ''الصلاة والسلام عليك يا رسول الله، وعلى آلك وأصحابك يا حبيب الله'' उस के पीछे खड़े इस्लामी भाई (जो एक बस से उतर उतर कर एक जगह जम्अ़ होते जा रहे थे) भी दुरूदे पाक के यही सीगे़ उस के साथ दोहरा रहे थे। सुन्नियत के इस बरमला इज़्हार व ए'लान ने मुझे ऐसा सुरूर बख़्शा कि येह मन्ज़र देखते ही सब्ज़ इमामे वालों की इस तह़रीक या'नी **दा'वते इस्लामी को दिल दे बैठा। आ़शिक़ाने रसूल** का वोह क़ाफ़िला यूंही बुलन्द आवाज़ से सलातो सलाम पढ़ता हुवा आगे बढ़ा तो मैं भी बे ख़ुदी के आ़लम में उन के साथ हो लिया।

दुरूदो सलाम की सदाएं बुलन्द करते हुए येह क़ाफ़िला जल्द ही इज्तिमाअ़ गाह में पहुंच गया मगर इस ने मुख़्तसर से दौरानिये में मेरे दिलो दिमाग पर वोह अ-सरात छोड़े कि मुझे फ़िस्क़ो फ़ुजूर और मक्र व दगा से **नफ़रत** महसूस होने लगी, मैं अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की **फ़िक्र** में खो गया। मैं ह़ैरान था कि मेरे ही जैसे इन नौ जवानों की रूहों को ऐसा ग़ुस्ल किस ने दिया कि इन की त़हारत व पाकिज़गी ने गुनाहों की गन्दगी में लिथड़े हुए मुझ जैसे गुनहगार को **ज़ाहिरो बात़िन की सफ़ाई** की फ़िक्र में मुब्तला कर दिया, और इन के किरदार को ऐसा इ़त्र बेज़ किस ने कर दिया कि इन की ख़ुश्बू से मुझ बद किरदारो बदबूदार के मशामे जां भी **मुअ़त्त़र** होने लगे। बहर ह़ाल मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा और कसीर ता'दाद में जम्अ़ **आ़शिक़ाने रसूल** के दरमियान जा बैठा।

एक नौ जवान मुबल्लिग़ बड़े मीठे मीठे अन्दाज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी

करने और उन की नाराज़ी से बचने के मौज़ूअ़ पर बयान कर रहे थे। उन के मुंह से निकलने वाले अल्फ़ाज़ पर ग़ौरो फ़िक्र करता हुवा मैं तसव्वुर ही तसव्वुर में जहन्नम के अ़ज़ाबात और जन्नत के **इन्आ़मात** भी देख आया। मैं सोचने लगा कि **अल्लाह** तआ़ला की **रिज़ा** कैसे ह़ासिल होगी ? उस के **ग़ज़ब** से मैं क्यूंकर बच पाऊंगा ? हाए ! जहन्नम की उस भड़कती आग और डंक मारते बड़े बड़े सांप बिच्छूओं का अ़ज़ाब क्यूंकर **बरदाश्त** करूंगा ? आह ! जन्नत की अ-ज़्ली ने'मतों, अ-बदी राह़तों से **महरूम** कर दिया गया तो मेरा क्या बनेगा ? बस उसी वक़्त मैं ने येह निय्यत कर ली कि ख़ुद को गुनाहों से बचा कर इन अ़ज़ाबों से **छुटकारा** पाना और ख़ूब ख़ूब नेक आ़'माल बजा ला कर जन्नती ने'मतों का **ह़क़दार** बनना है। बयान के आख़िर में मुबल्लिग़ ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तरग़ीब दिलाई तो मैं ने दिल में ठान ली कि कभी वक़्त निकाल कर म-दनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करूंगा।

बयान के बा'द लाइट बन्द कर दी गई और सब्ज़ गुम्बद का तसव्वुर बांध कर दुरूदे पाक और फिर का'बातुल्लाह शरीफ़ का तसव्वुर बांध कर **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सिल्सिला हुवा। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी ऐसी जगह पर हूं जहां हर चीज़ मेरे रब्बे क़दीर का ज़िक्र कर रही है। इस के बा'द **दुआ़** शुरूअ़ हो गई। मुझे क्या पता था कि अपने गुनाहों का इक़रार कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश व मग़्फ़िरत का सुवाल करने वाले ऐसी **गिर्याज़ारी** करते हैं कि पथ्थर दिल को भी रोना आ जाए, मैं कब जानता था कि उस ख़ुदाए जब्बारो क़ह्हार के ख़ौफ़ से **ज़ारो क़ितार** रोने वाले भी दुन्या में बाक़ी हैं, मुझे कहां मा'लूम था कि अपने परवर्द

गार عَزَّوَجَلَّ से दफ़्ए़ मसाइब, ह़ल्ले मुश्किलात और शिफ़ाए मरीज़ां के लिये इस त़रह़ रो रो कर **फ़रियाद** की जाती है । येह मेरी ज़िन्दगी की पहली दुआ़ थी जिस में मुझे लगा कि जैसे दिल से गुनाहों का सारा **मैल कुचैल** और ग़ुबार उतर गया है और येह उजला उजला हो गया है । मेरी रूह़ की आलाइशें दूर हो गईं और वोह **निखर** गई है । फिर खड़े हो कर **सलातो सलाम** पढ़ा गया । मुझे यूं लगा कि गोया मैं सेंकड़ों उ़श्शाक़ के हमराह मदीनए पाक में रौज़ए अक़्दस के सामने मौजूद हूं । अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इतना क़ुर्ब मुझे शायद पहले कभी न महसूस हुवा होगा, उन पर निसार होने और उन के क़दमों में लौटने को दिल इतना पहले कभी न मचला होगा ।

इस के बा'द सुन्नतें सीखने सिखाने के **ह़ल्क़े** सज गए । मैं चूंकि पहली बार इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हुवा था । लिहाज़ा किसी ह़ल्क़े वालों से जान पहचान न होने के बाइ़स कहीं बैठा नहीं बल्कि चल फिर कर मुख़्तलिफ़ ह़ल्क़ों से थोड़ा थोड़ा सुनने लगा । ہر گلے را رنگ و بوئے دیگر است (या'नी हर फूल का अपना रंग और ख़ुश्बू थी), मुबल्लिग़ीने इस्लाम के इन खिलते हुए फू लों से सारा गुलशन महक रहा था और मैं उस बाग़ में इधर उधर टहल रहा था । अचानक एक मुबल्लिग़ इस्लामी भाई ने बड़ी शफ़्क़त व महब्बत से मुझ से मुलाक़ात की और मेरा मुकम्मल तआ़रुफ़ ह़ासिल करते हुए मेरा बा क़ाइ़दगी से इज्तिमाअ़ में आने बल्कि दूसरों को लाने का ज़ेह्न बनाया और मुझे अपना पक्का दोस्त बना लिया । ह़ल्क़े ख़त्म हुए तो सब इस्लामी भाई एक दूसरे को मिलने लगे । मैं ह़ालां कि किसी को जानता तक न था मगर सब मुझे यूं अपनाइयत से मिलते जाते जैसे सब मेरे वाक़िफ़ हों । मैं मु-

तअ़ज्जिब था कि या ख़ुदाया ! येह कैसे लोग हैं कि **पहली ही मुलाक़ात** में ऐसी महब्बत दे रहे हैं जो मुझे कभी शायद अपनों ने भी न दी हो। ऐ मेरे परवर्द गार ! येह कैसे लोग हैं जो ऐसे दौर में भी ऐसी बे ग़रज़ महब्बत से सरशार हैं कि जहां सगे रिश्तेदार भी बिग़ैर मत़लब के मुंह नहीं लगाते, क्या इन्सानों के इस जंगल में जहां हिर्स व हवस के भूके भेड़िये हर त़रफ़ ख़ुद ग़र्ज़ी का मुंह खोले निगलने को तय्यार हैं ऐसे **बे लौस मुबल्लिग़ीन** भी मौजूद हैं ? अख़्लाक़ व महब्बत और ख़ुलूस व मुरव्वत के येह पैकर क्या इसी धरती पर अपनी ख़ैर ख़्वाही की बहार दिखा रहे हैं ? कहीं मैं ख़्वाब तो नहीं देख रहा। मगर मुझे यक़ीन करना पड़ा कि येह ख़्वाब नहीं **ह़क़ीक़त** थी। बस **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में पहली बार शरीक होते ही मेरे दिल से येह सदा निकलने लगी **ऐ अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ **मुझे भी इन जैसा बना दे।**

इन्ही जज़्बात के साथ देर तक अपने उन इस्लामी भाइयों में घूमता फिरता रहा। मगर मैं मजबूर था कि ज़ियादा देर तक रुक नहीं सकता था क्यूं कि होस्टल का मेन गेट बन्द हो जाता था। सो बा दिले न ख़्वास्ता मैं वापस हो लिया। अगले दिन मैं ने अपने हम मक्तब (रूम मेट) दोस्तों को अपने **तअस्सुरात** से आगाह किया और आइन्दा जुमा'रात उन्हें भी साथ चलने की दा'वत दी। उन्हों ने ह़ामी भर ली। चुनान्चे अगली जुमा'रात हम तीनों (जिन में मेरा वोह मोह़सिन भी शामिल था जिस ने मुझे इस इज्तिमाअ़ के बारे में बताया था) **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुए। इज्तिमाअ़ में हमें दूसरे इस्लामी भाइयों को दा'वत पेश कर के लाने की तरग़ीब दिलाई गई। हम ने आइन्दा जुमा'रात

को काफ़ी त़-लबा को इज्तिमाअ़ की दा'वत दी और सात या आठ इस्लामी भाइयों को दारुल इक़ामत से इज्तिमाअ़ में लाने में काम्याब भी हुए। इसी त़रह़ हर जुमा'रात को इज्तिमाअ़ में ह़ाज़री के साथ साथ दारुल इक़ामत में भी **म-दनी काम** शुरूअ़ कर दिया। ह़ालां कि वहां बद मज़हबों की इजारा दारी थी और उन की त़रफ़ से हमारी शदीद मुख़ा-लफ़त भी हुई मगर हम उन तमाम मुख़ा-ल-फ़तों का सामना करते हुए भी म-दनी काम करते रहे। कुछ ही अ़र्से बा'द मैं ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज़ भी अपने सर पर सजा लिया।

फिर मैं ने आ़लमे इस्लाम के अ़ज़ीम रहनुमा शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** की ज़ियारत की। हुवा यूं कि हम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर थे कि हमें इत्तिलाअ़ मिली कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) में **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में बयान फ़रमाएंगे। हमारे क़ाफ़िले का रुख़ गुलज़ारे त़यबा की त़रफ़ हो गया। शबे मे'राज की पुरकैफ़ साअ़तें थीं जब मैं ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत की। मैं आ़लमे वज्द में उस नूरानी चेहरे को तकता रहा जिस के बारे में ख़त़ीब साह़िब ने फ़रमाया था : "मौलाना इल्यास क़ादिरी साह़िब के एह़सानात का **बदला कौन चुका सकता है ?**" इसी इज्तिमाअ़ में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामन से वाबस्ता हो कर मैं **अ़त्तारी** भी बन गया।

फिर मैं सूबाई व बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा। जहां मुझे **नेकी की दा'वत** आ़म करने का मज़ीद जज़्बा नसीब हुवा। मैं ने अपने शहर जा कर अपनी बिसात़ के मुत़ाबिक़ **दा'वते इस्लामी** और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

का तआ़रुफ़ आ़म करना शुरूअ़ किया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे शहर में भी **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम शुरूअ़ हो गया। वक़्त गुज़रने के साथ साथ इर्द गिर्द के क़स्बों और देहातों में भी म-दनी क़ाफ़िले उतर गए और सुन्नतों की बहारें आ गईं।

इल्मे दीन ह़ासिल करने का शौक़ तो मुझे पहले से ही था। **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से येह शौक़ मज़ीद परवान चढ़ा और मैं दर्से निज़ामी करने के लिये बाबुल मदीना कराची पहुंचा और जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया। दौराने ता'लीम मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इल्म दोस्ती के सदक़े, आप की **सोह़बतें** भी नसीब हुईं। फ़ारिगुत्तह़सील होने के बा'द ता दमे तह़रीर मैं दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (बाबरी चोक (गुरू मन्दिर चौक) बाबुल मदीना कराची) में **फ़तवा नवेसी** की तरबिय्यत ह़ासिल कर रहा हूं। ख़त़ीब साह़िब के जुम्ले अभी भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं : "मौलाना इल्यास क़ादिरी साह़िब के एह़सानात का बदला कौन चुका सकता है ?"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने फ़ैज़ाने सुन्नत, **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** और **आ़शिक़ाने रसूल** के किरदार व अ़मल से मु-तअस्सिर हो कर अपना सब कुछ **दा'वते इस्लामी** पर निसार कर देने का जज़्बा पाने वाले इस्लामी भाई की बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाई। हमें भी चाहिये कि इस्लामी भाइयों पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल पढ़ने की दा'वत दें। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़

कर्दा कुतुबो रसाइल का त़र्ज़े तह़रीर आ़म फ़हम, शीरीं और अन्दाज़े तफ़्हीम ऐसा हमदर्दाना होता है कि पढ़ने वाला मु-तअ़स्सिर हुए बिग़ैर नहीं रह सकता। येही वजह है कि अ़वामो ख़वास दोनों आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तह़रीरों के **शैदाई** हैं और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ते हैं बल्कि दीगर मुसल्मानों को मुत़ा-लए़ की तरग़ीब दिलाने के साथ साथ कसीर ता'दाद में ख़रीद कर **मुफ़्त तक़्सीम** भी करते हैं। ता दमे तह़रीर दरजनों मौज़ूआ़त पर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुन्फ़रिद उस्लूब की ह़ामिल मु-तअ़द्दद **कुतुबो रसाइल** और **तह़रीरी बयानात** मन्ज़रे आम पर आ चुके हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इन कुतुबो रसाइल की ब-र-कत से कसीर मुसल्मानों को तौबा नसीब हुई और उन की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(18) बचपन ही से म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई अ़ब्दुल ह़बीब अल अ़त़्तारी का बयान कुछ यूं है : मैं ने जब से आंख खोली घर में सब्ज़ इमामे और **सफ़ेद म-दनी लिबास** के नज़ारे देखे वोह इस त़रह़ कि मेरे वालिद साह़िब **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे। यूं मैं सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** में पला बढ़ा। मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त करवा कर **अ़त़्तारी** भी बनवा दिया गया। मैं वालिद साह़िब के साथ हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत किया करता। फिर मुझे वालिद साह़िब के हमराह बारगाहे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़ाज़िरी भी नसीब

होती । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे वालिदे मोह़तरम ने मुझे बचपन ही में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में पेश कर दिया था कि आप इस से **दा'वते इस्लामी** का जो काम चाहें ले लीजिये। मैं थोड़ा बड़ा हुवा तो हम एक पोश अ़लाक़े में मुन्तक़िल हो गए । वहां नेक सोह़बत से मह़रूमी की वजह से मैं **म-दनी माह़ोल** से दूर होना शुरूअ़ हो गया और मॉडर्न बन गया । फिर मेरे एक मोह़सिन इस्लामी भाई ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और मुझे बा इस्रार **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में बिठा दिया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ टूटा हुवा तअ़ल्लुक़ फिर से जुड़ना शुरूअ़ हो गया । **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे फ़ैज़ से हुसूले इ़ल्म का जज़्बा मिला और मैं ने **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने के साथ साथ दर्से निज़ामी में भी दाख़िला ले लिया । इस दौरान **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी काम** भी करता रहा । फ़ारिगुत्तह़सील होने के बा'द **निगाहे मुर्शिद** के सदक़े मुझे ता दमे तह़रीर पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना व बाबुल मदीना मुशा-वरत और मजलिसे बैरूने मुमालिक की रुक्नियत ह़ासिल और मजलिसे जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन) व मजलिसे ह़ज व उ़म्रह का मैं ख़ादिम (निगरान) हूं । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे दो बेटे हैं, वोह भी **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हैं, दोनों ही ह़िफ़्ज़ के त़ालिबुल इ़ल्म हैं और आ़लिम बनने का जज़्बा रखते हैं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(19) बुरे अ़क़ाइद से तौबा कर ली

बाबुल मदीना कराची में मुक़ीम एक इस्लामी भाई मुह़म्मद अक्बर अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 26

साल) का कहना कुछ यूं है : मेरी बद नसीबी कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता होने से पहले बद मज़हबों के दारुल उ़लूम में ज़ेरे ता'लीम था। मैं ने ह़िफ़्ज़ भी उन्ही के पास किया था। उन की तह़रीर व तक़रीर इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चाशनी से **ना आशना** थी। औलियाउल्लाह से **निस्बत क़ाइम** करना, उन के नज़्दीक तौह़ीद के मुनाफ़ी था। ऐसे बद अ़क़ीदा माह़ोल में रहने की वजह से मेरी आंखों पर भी तअ़स्सुब की **पट्टी** बंधी हुई थी जो मुझे राहे ह़क़ देखने से बाज़ रखे हुए थी। इसी दौरान एक इस्लामी भाई से मेरी राहो रस्म बढ़ी तो उन्हों ने मुझे उन के **कुफ़्रिय्या व गुमराह कुन** अ़क़ाइद के बारे में बताया, ह़स्बे ज़रूरत किताबें भी दिखाईं। अब मेरी आंखें खुलीं कि मैं तो अपनी आख़िरत बरबाद किये बैठा हूं। मैं ने उसी वक़्त **तौबा** की और **जामिअ़तुल मदीना** बाबुल मदीना कराची के खुश अ़क़ीदा माह़ोल में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया। अब मैं **रूह़ानिय्यत** की लज़्ज़त से आशना हो चुका था। कुछ ही अ़र्से में दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता हो कर **अ़त्त़ारी** भी बन गया। यूं दर्से निज़ामी मुकम्मल करने के बा'द जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मुह़म्मदी बाबुल मदीना कराची) में ब हैसिय्यते मुदर्रिस इ़ल्मे दीन की रोशनी फैलाने के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत नूरुल इ़रफ़ान** (सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी मस्जिद, नज़्द पोलीस चौकी बाबुल मदीना कराची) में फ़तवा नवेसी की तरबिय्यत भी ह़ासिल कर रहा हूं। इलावा अज़ीं अपने अ़लाक़े में **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत का ख़ादिम (निगरान) भी हूं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ĐÚ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

साल) का कहना कुछ यूं है : मेरी बद नसीबी कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता होने से पहले बद मज़हबों के दारुल उ़लूम में ज़ेरे ता'लीम था। मैं ने हिफ़्ज़ भी उन्ही के पास किया था। उन की तह़रीर व तक़रीर इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चाशनी से **ना आशना** थी। औलियाउल्लाह से **निस्बत क़ाइम** करना, उन के नज़्दीक तौह़ीद के मुनाफ़ी था। ऐसे बद अ़क़ीदा माह़ोल में रहने की वजह से मेरी आंखों पर भी तअ़स्सुब की **पट्टी** बंधी हुई थी जो मुझे राहे ह़क़ देखने से बाज़ रखे हुए थी। इसी दौरान एक इस्लामी भाई से मेरी राहो रस्म बढ़ी तो उन्हों ने मुझे उन के **कुफ़्रिय्या व गुमराह कुन** अ़क़ाइद के बारे में बताया, ह़स्बे ज़रूरत किताबें भी दिखाईं। अब मेरी आंखें खुलीं कि मैं तो अपनी आख़िरत बरबाद किये बैठा हूं। मैं ने उसी वक़्त **तौबा** की और **जामिअ़तुल मदीना** बाबुल मदीना कराची के खुश अ़क़ीदा माह़ोल में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया। अब मैं **रूह़ानिय्यत** की लज़्ज़त से आश्ना हो चुका था। कुछ ही अ़र्से में दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता हो कर **अ़त्त़ारी** भी बन गया। यूं दर्से निज़ामी मुकम्मल करने के बा'द जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मुह़म्मदी बाबुल मदीना कराची) में ब हैसिय्यते मुदर्रिस इ़ल्मे दीन की रोशनी फैलाने के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत नूरुल इ़रफ़ान** (सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी मस्जिद, नज़्द पोलीस चौकी बाबुल मदीना कराची) में फ़तवा नवेसी की तरबिय्यत भी ह़ासिल कर रहा हूं। इ़लावा अज़ीं अपने अ़लाक़े में **दा'वते इस्लामी** की ज़ैली मुशा-वरत का ख़ादिम (निगरान) भी हूं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **पर अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

रह़मतों की छमा छम बरसात हो जिन की बनाई हुई तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ज़रीए मुझे ख़ुश **अ़क़ीदगी** की दौलत नसीब हुई।

*मक़्बूल जहां भर में हो **दा'वते इस्लामी***
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(20) खेलों का शौक़ीन, मुदर्रिस बन गया

मर्कज़ुल औलिया लाहोर के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद आ़मिर ह़मीद अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 31 साल) ने अपनी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी में बहार आने का तज़्किरा कुछ यूं किया कि मैं मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा नौ जवान और क्रिकेट का जुनून की ह़द तक रसिया था। मुझे एक इस्लामी भाई ने 22, 23, 24 अप्रेल सि. 1994 ई. को इस्लामआबाद में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी मगर मेरी बद नसीबी कि मैं उस इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर न हो सका। अगले साल 5, 6, 7 अप्रेल सि. 1995 ई. को मर्कज़ुल औलिया लाहोर में होने वाले तीन रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत मिली। 7 अप्रेल बरोज़ जुमु-अ़तुल मुबारक नमाज़े अ़स्र के बा'द शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुन्फ़रिद बयान "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है**" सुना, नमाज़े मग़रिब के बा'द तसव्वुरे मदीना किया गया, तसव्वुर ही तसव्वुर में सूए मदीना जाने वाले उस क़ाफ़िले में मैं भी शरीक हो गया, मुझे बड़ा लुत्फ़ आया। इस के बा'द रिक़्क़त अंगेज़ दुआ मांगी गई। शु-रकाए

इज्तिमाअ़ की आहो ज़ारी बयान से बाहर है। मैं भी अपने गुनाहों को याद कर के ख़ूब रोया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने उसी इज्तिमाअ़ में सच्चे दिल से **तौबा** कर ली और अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया। इसी इज्तिमाअ़ में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर अ़त्तारी भी बन गया। घर वापस आने के बा'द अपने गाउं में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ़ कर दिया। सुन्नतों का पैग़ाम घर घर आ़म होने लगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई इस्लामी भाइयों ने अपने सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया। आहिस्ता आहिस्ता वहां इस्लामी बहनों में भी म-दनी काम शुरूअ़ हो गया और कई इस्लामी बहनों ने म-दनी बुरक़अ़ अपना लिया।

मैं ने दुन्यवी ता'लीम को ख़ैर आबाद कह कर मुह़र्रमुल ह़राम सि. 1417 हि. ब मुत़ाबिक़ 19 मई सि. 1996 ई. बरोज़ इतवार **जामिअ़तुल मदीना** फ़ैज़ाने मदीना मर्कज़ुल औलिया लाहोर के शो'बए ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा में दाख़िला ले लिया। जब सि. 1997 ई. में वहां शो'बए दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) का आग़ाज़ हुवा तो मैं दर्से निज़ामी करने लगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्से निज़ामी की तक्मील के बा'द मैं ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथों दस्तार बन्दी की सआ़दत पाई। (ता दमे तह़रीर) اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना मर्कज़ुल औलिया लाहोर) में पढ़ाते हुए पाचवां साल है। इस के साथ साथ मैं निगाहे मुर्शिद से **डिवीज़न मुशा-वरत** का ख़ादिम (निगरान) भी हूं और पंजाब अ़त्तारी की निगरान मजलिस का रुक्न भी। इस वक़्त घर में भी اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी माह़ोल** है, मेरे बच्चों की अम्मी भी जामिअ़तुल मदीना लिल बनात में तदरीस कर रही हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(21) अव्वल पोज़ीशन ह़ासिल की

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद ह़स्सान रज़ा अल अ़त़्त़ारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) का बयान कुछ यूं है : मेरे वालिद साह़िब सि. 1987 ई. से ही **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे। जब वोह हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में जाते तो मुझे भी साथ ले जाते। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ बचपन ही से **दा'वते इस्लामी** का प्यारा प्यारा **म-दनी माह़ोल** मेरी आंखों में समा गया और मैं दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता हो कर **अ़त्त़ारी** भी बन गया। जब थोड़ा बड़ा हुवा तो **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम **मद्र-सतुल मदीना** से ह़िफ़्ज़े कुरआन किया। फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तसानीफ़ का मुत़ा-लआ़ करने के बा'द आ़लिम बनने का ज़ेह्न बना और मैं ने दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया। 2005 ई. में निगाहे मुर्शिद के तुफ़ैल दौरए ह़दीस के इम्तिह़ान में **पहली** और तन्ज़ीमुल मदारिस के द-र-जए आ़लिमिय्या के इम्तिह़ान में दूसरी पोज़ीशन ह़ासिल की और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुबारक हाथों से दस्तारे फ़ज़ीलत ह़ासिल की। (ता दमे तह़रीर) **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** (बाबुल मदीना बाबरी (गुरू मन्दिर) चोक कराची) में **फ़तवा नवेसी** की तरबिय्यत ह़ासिल करने के साथ साथ **जामिअ़तुल मदीना** (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची) में दौरए ह़दीस के अस्बाक़ पढ़ाने की सआ़दत भी ह़ासिल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(22) क्लीन शेव नौ जवान की तौबा

डेरा इस्माईल ख़ान (सूबा सरह़द, पाकिस्तान) के एक म-दनी इस्लामी भाई मुह़म्मद बिलाल अल अ़त़्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 29 साल) का बयान कुछ यूं है कि पहले पहल मैं क्लीन शेव था। दाढ़ी और ज़ुल्फ़ें रखने का बिलकुल ज़ेह्न नहीं था बल्कि अगर कोई मुझे इन की तरग़ीब भी दिलाता तो मैं हंस कर टाल देता था। मेरे **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे महके महके **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने का आग़ाज़ कुछ यूं हुवा कि मेरे बड़े भाई (जो **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे) ने मुझे इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **जामिअ़तुल मदीना** (फ़ैज़ाने मदीना मर्कज़ुल औलिया लाहोर) में दाख़िल करवा दिया। शुरूअ़ शुरूअ़ में तो वहां मेरा दिल न लगा, मैं ने वहां से राहे फ़िरार इख़्तियार करने का भी सोचा मगर भाई की वजह से नाकाम रहा। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से वक़्त गुज़रने के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** की मह़ब्बत मेरे दिल में घर कर गई और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने में इस्तिक़ामत नसीब हो गई। इस दौरान **अ़त्तारी** भी बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने 7 साल के अ़र्से में दर्से निज़ामी का कोर्स मुकम्मल किया और अब मैं एक **मुदर्रिस** की ह़ैसिय्यत से **जामिअ़तुल मदीना** डेरा इस्माईल ख़ान में पढ़ा रहा हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक क्लीन शेव्ड नौ जवान को

दूसरों को सुन्नतों की तरग़ीब देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है । लिहाज़ा हमेशा **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(23) सारा घराना अ़त्तारी हो गया

नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के म-दनी इस्लामी भाई मुह़म्मद आसिफ़ रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 29 साल) का बयान कुछ यूं है : मेरे वालिदैन के हां औलाद न होती थी । तक़रीबन 9 **साल** तक औलाद की ने'मत से **मह़रूम** रहने के बा'द मेरे वालिदे मोह़तरम अपने पीरो मुर्शिद (जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना जमाअ़त अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ए मजाज़ थे) की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और सलाम अ़र्ज़ किया । पीर साह़िब ने सलाम का जवाब देने के फ़ौरन बा'द इर्शाद फ़रमाया : "अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार ! लगता है आज **औलाद** के लिये आए हो ।" अ़र्ज़ की : "जी ह़ुज़ूर ! ऐसा ही है ।" इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बेटा** अ़ता फ़रमाएगा, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मगर शर्त़ येह है कि उसे **ह़ाफ़िज़ो आ़लिम** बनाना ।" अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! जैसे आप का ह़ुक्म ।" चुनान्चे पीरो मुर्शिद की दुआ़ की ब-र-कत से मेरी पैदाइश हुई । तक़रीबन 5 बरस की उ़म्र में गाउं के स्कूल में दाख़िल करवा दिया गया । फिर हम 3 साल बा'द शहर मुन्तक़िल हुए तो मुझे इंग्लिश मीडियम स्कूल में क्लास वन में दाख़िल करवा दिया गया । 1988 ई. में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बैअ़त हो कर अ़त्तारी भी बन गया ।

जब मैं सातवीं क्लास में था तो एक सुब्ह़ जब मैं स्कूल जाने के लिये **तय्यारी** कर चुका था कि वालिद साहिब नींद से बेदार हुए और मुझ से फ़रमाया : ''आज से तुम स्कूल **नहीं** जाओगे ।'' मैं तो ख़ामोश रहा मगर मेरे दादा जान मर्हूम (जो सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मुरीद थे) ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''क्या बात है इसे स्कूल जाने से क्यूं रोकते हो ।'' वालिदे मोह़तरम ने कहा : ''आज से येह **मद्र-सतुल मदीना**'' जाएगा, आज क़िब्ला पीर साहिब मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''क्या अपना **वा'दा** भूल गए, तुम ने कहा था कि इसे **ह़ाफ़िज़ो आ़लिम** बनाओगे मगर तुम ने इसे इंग्लिश (मीडियम) स्कूल में दाख़िल करवा दिया, जाओ और इस को **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िल करवा दो ।''

चुनान्चे मुझे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (नवाब शाह) में क़ाइम **मद्र-सतुल मदीना** के **शो'बए ह़िफ़्ज़** में दाख़िल करवा दिया गया । वहां اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने क़ुरआने मजीद मुकम्मल ह़िफ़्ज़ किया । फिर क़ारी साहिब की भरपूर **इन्फ़िरादी कोशिश** से 1998 ई. में **जामिअ़तुल मदीना** (गुलिस्ताने जौहर बाबुल मदीना कराची) में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया । सि. 2005 ई. में दर्से निज़ामी मुकम्मल हुवा और मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के दस्ते मुबारक से दस्तारे फ़ज़ीलत सर पर सजाने के बा'द ख़िदमते दीन में मसरूफ़ हो गया । (ता दमे तह़रीर) **दा'वते इस्लामी** के एक अहम इदारे ''**अल मदी-नतुल इल्मिय्या**'' में शो'बए तराजिम के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से ख़िदमते दीन की सआ़दत ह़ासिल है ।

मेरे दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने से क़ब्ल ख़ानदान का एक भी फ़र्द **म-दनी माहोल** में नहीं था मगर अब اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ानदान के कई घराने **म-दनी माहोल** से **वाबस्ता** हैं और **अत्तारी** हैं । मेरे एक चचा जिन्हों ने मेरे साथ ही **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िला लिया था, वोह भी हाफ़िज़े कुरआन और **जामिअतुल मदीना** से फ़ारिगुत्तहसील "म-दनी आलिम" हैं । मेरे वालिदे मोहतरम भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से तालिब हैं जब कि वालिदए मोहतरमा और तमाम बहन भाई, उन की औलाद, मेरी बेटी और उस की अम्मी सब के सब **अत्तारी** बन गए और हमारे घर का नाम भी "**अत्तारी हाउस**" है । येह सब मेरे शैख़े तरीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का फ़ैज़ है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें हासिदीन के हसद, ज़ालिमों के ज़ुल्म और शरीरों के शर से महफ़ूज़ रखे और हमें अपने प्यारे **हबीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी पर इस्तिक़ामत अता फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया ! कि **दा'वते इस्लामी** को अकाबिरीने अहले सुन्नत कितना पसन्द करते हैं कि ख़्वाब में आ कर अपने मुरीदीन को **दा'वते इस्लामी** की ब-र-कतें हासिल करने की ताकीद फ़रमाते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(24) मॉडर्न नौ जवान आ़लिम कैसे बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद रिज़्वान रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी (उ़म्र तक़रीबन 24 साल) का बयान कुछ यूं है : मैं इंग्लिश मीडियम में पढ़ने वाला एक मॉडर्न लड़का था, नित नए फ़ेशन अपनाना मेरा मह़बूब **मश्ग़ला** था। दीनी मा'लूमात न होने के बराबर थीं। आख़िरत की फ़िक्र से **ग़ाफ़िल** था। जब मैं नवीं क्लास में था तो मेरे कज़िन अपने घर वालों समेत **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से मुन्सलिक हो गए। वोह मुझ पर भी **इन्फ़िरादी कोशिश** करते और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कतें बताते हुए हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दिया करते। मगर अफ़्सोस ! कि मैं उन को हंस कर टाल देता। बिल आख़िर उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** काम्याब हुई और 1998 ई. जमादिय्युस्सानी के आख़िरी हफ़्ते की रह़मतों भरी घड़ियां थीं जब मैं हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक होने के लिये ख़ुसूसी बस में बैठ गया। मुझे सब्ज़ इ़मामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत बहुत अच्छी लग रही थी। जब बस सूए फ़ैज़ाने मदीना रवाना हुई तो एक मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** ने **सफ़र की दुआ़** पढ़ाई। रास्ते में जहां कहीं चढ़ाई आती तो सब मिल कर اَللّٰہُ اَکْبَر, اَللّٰہُ اَکْبَر, कहते और जब बस बुलन्दी से नीचे उतरती तो سُبْحٰنَ اللّٰہ पढ़ते। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ नेकियों में अपना वक़्त गुज़ारते हुए हम **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़

फ़ैज़ाने मदीना पहुंच गए। मैं **फ़ैज़ाने मदीना** में दाख़िल हुवा तो बस देखता ही रह गया। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे वाले प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों की बहारें नज़र आ रही थीं। एक दूसरे को बड़ी महब्बत और इन्तिहाई बा अदब अन्दाज़ में मिलना, छोटों पर शफ़्क़त करना! मेरे मन को **बहुत भाया**। एक मुबल्लिग़ **दा'वते इस्लामी** ने बड़े ख़ूब सूरत अन्दाज़ में सुन्नतों भरा **बयान** किया। इस के बा'द एक इस्लामी भाई ने मुख़्तलिफ़ फ़ज़ीलतों के ह़ामिल **छ दुरूदे पाक** पढ़ाए। दिल को छू लेने वाली ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सदाओं और इज्तिमाई त़ौर पर मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ **दुआ़ओं** और बा'दे दुआ़ लगाए जाने वाले **ह़ल्क़ों** और **ह़ल्क़ों** के बा'द की जाने वाली **इन्फ़िरादी कोशिश** के मनाज़िर ने मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया। मेरे ज़मीर ने मुझे मलामत की, कि जब इस गुनाहों भरे मुआ़शरे में ऐसा नेकियों से भरपूर **म-दनी माह़ोल** मौजूद है तो इस से मुंह मोड़ना या ऐसे इज्तिमाअ़ में शिर्कत न करना **सख़्त महरूमी** की बात है। मैं ने उसी वक़्त येह निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में **पाबन्दी** से शिर्कत किया करूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस निय्यत पर अ़मल भी किया क्यूं कि हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ गोया हमारे लिये नेकियों की बेटरी चार्ज करने की मानिन्द है, हफ़्ता भर उस का असर ज़ेह्न पर रहता है। आइन्दा हफ़्ते जब मैं इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा तो मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि वोह हस्ती जिन के सदक़े हमें **दा'वते इस्लामी** जैसी

अ़ज़ीम म-दनी तह़रीक मिली, या'नी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने दीदार के जल्वे लुटा रहे थे। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने र-जबुल मुरज्जब के फ़ज़ाइल पर बयान फ़रमाया। बयान के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इज्तिमाई बैअ़त करवाई। मैं भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए गौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल कर **अ़त्तारी हो** गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ

मुझे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का शौक़ तो बहुत था लेकिन कम उ़म्री की वजह से इजाज़त न मिलती थी। अलबत्ता एक मर्तबा मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने में काम्याब हो ही गया। म-दनी क़ाफ़िले में मुझे इतना कुछ सीखने को मिला जो मैं **सारी ज़िन्दगी न सीख पाया था**। घर भर में मेरा **ग़ुस्सा** मशहूर था मगर म-दनी क़ाफ़िले से वापस घर आने के बा'द मेरे मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात हुई तो मैं ख़िलाफ़े मा'मूल ग़ुस्से में आपे से बाहर होने के बजाए **ख़ामोशी** से दूसरे कमरे में चला गया। येह म-दनी क़ाफ़िले की पहली **ब-र-कत** थी जिसे मुझ समेत घर वालों ने भी खुली आंखों से देखा। जूं जूं मैं **म-दनी माह़ोल** के रंग में रंगता चला गया, मेरे किरदार व गुफ़्तार में मुस्बत तबदीलियां रूनुमा होती गईं। **म-दनी माह़ोल** से मुन्सलिक रहते हुए दर्सो बयान भी सीखने को मिला। इस्लामी भाइयों की मह़ब्बतों और शफ़्क़तों से बिल आख़िर मैं ने अपने सर पर सब्ज़ इ़मामा भी सजा

लिया। ता ह़ाल इस पर इस्तिक़ामत ह़ासिल है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मरते दम तक इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** ने मुझे इतना बदल कर रख दिया कि सब घर वाले जो पहले मेरी तेज़ मिज़ाजी के शाकी थे, अब मुझ से बहुत ख़ुश हैं। वालिदैन तो मेरी फ़रमा बरदारी पर फूले नहीं समाते। येह सब मेरे शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की **म-दनी तरबिय्यत** का नतीजा है।

बा'द अज़ां मेरे एक कज़िन ने मुझ पर दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** की। मगर मैं फ़ौरी त़ौर पर कोई फ़ैसला न कर सका। मुझे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के कुतुबो रसाइल पढ़ने का बहुत शौक़ था। रसाइल पढ़ने की एक वजह उन के नामों का दिलचस्प होना भी थी क्यूं कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रसाइल के नाम उ़मूमन ऐसे रखते हैं कि पहली नज़र में वोह किसी कहानी वग़ैरा का रिसाला मा'लूम होता है इस लिये लोग उसे दिलचस्पी से ख़रीदते और पढ़ते भी हैं। मैं **फ़ैज़ाने सुन्नत** भी बहुत शौक़ से पढ़ा करता था एक दिन **फ़ैज़ाने सुन्नत** पढ़ते पढ़ते इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल बाब सामने आया तो पढ़ने में **बड़ा मज़ा** आया। मज़ीद पढ़ा तो बस पढ़ता ही चला गया कि **त़ु-लबाए इ़ल्मे दीन व उ़-लमाए किराम** के इस क़दर फ़ज़ाइल हैं। फिर बार बार उन फ़ज़ाइल को पढ़ा तो मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं भी दर्से निज़ामी करूंगा।

लेकिन इस के बा'द मुश्किल येह आई कि कई दफ़्आ़ के इस्रार के बा वुजूद वालिदा राज़ी नहीं होती थीं। लेकिन मुझे

आज भी हैरत होती है कि मेरी वोह वालिदा जो पहले तो मुझे दर्से निज़ामी की इजाज़त नहीं देती थीं। मगर जब मैं मेट्रिक के पेपर से फ़ारिग़ हो कर घर आया तो दूसरे दिन ख़ुद ही मुझे फ़रमाने लगीं कि "क्या हुवा तुम ने अभी तक दाख़िला नहीं लिया ताख़ीर न करो कि इस में नुक़्सान है।" बस फिर क्या था मैं ने हाथों हाथ **जामिअ़तुल मदीना** (फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी गुलिस्ताने जौहर बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला ले लिया कि कहीं वालिदा दोबारा मन्अ़ न कर दें। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वहां दर्से निज़ामी करने के साथ साथ मुबल्लिग़ीने **दा'वते इस्लामी** की सोह़बत में रहने का भी मौक़अ़ मिला। जिस की ब-र-कत से मैं **म-दनी कामों** में आगे बढ़ता चला गया। द-र-जए सालिसा में हमारा द-रजा जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुश्ताक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ (अन्नूर सोसायटी ब्लोक 19 फेडरल बी एरिया बाबुल मदीना कराची) मुन्तक़िल हो गया। यहां मुझे अ़लाक़ाई इस्लामी भाइयों से मिल कर ख़ूब ख़ूब म-दनी काम करने का मौक़अ़ मिला वहां اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़ल्क़ा सत्ह़ की ज़िम्मादारी मिली हुई थी। जामिअ़तुल मदीना में पढ़ते हुए اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ गाहे ब गाहे अपने मुर्शिदे करीम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बारगाह में भी हाज़िर होता रहता था।

द-र-जए सादिसा (या'नी छटे द-रजे) में हम दोबारा जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गुलिस्ताने जौहर) मुन्तक़िल हो गए। लेकिन मैं म-दनी काम के लिये अ़लाक़ा वॉटर पम्प ही में आया करता था। एक मर्तबा चन्द इस्लामी भाइयों के रविय्ये से दिल बरदाश्ता हो कर मैं ने इरादा कर लिया कि अब इस अ़लाक़े में नहीं आया करूंगा। चुनान्चे उस

दिन मैं ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर अ़लाक़े में जाने के बजाए अपने जामिआ़ ही में सो गया। जब मैं सोया तो जिन के सदक़े मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करने का जज़्बा मिला या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए और अपने मुबारक हाथ मेरी सम्त खोल दिये। मैं लपक कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ बढ़ा। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझे अपने सीने से लगा लिया। कुछ ही देर बा'द मेरी आंख खुली तो मैं समझ गया कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुझे **तसल्ली** देने के लिये तशरीफ़ लाए थे। लिहाज़ा फ़ौरन उठ कर अ़स्र की नमाज़ से काफ़ी देर पहले अपने ह़ल्क़े में जा पहुंचा। यूं मैं दर्से निज़ामी पढ़ने के साथ साथ म-दनी काम करते करते दौरए ह़दीस में पहुंच गया।

हमारा द-रजा जामिअ़तुल मदीना (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना पुरानी सब्ज़ी मन्डी) में मुन्तक़िल हो गया तो यहां **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी की तरकीब ज़ियादा बनने लगी आप की सोह़बत ने मज़ीद इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का **शौक़** बेदार किया। चुनान्चे फ़ारिग़ुत्तह़सील होने के बा'द मैं ने जामिअ़तुल मदीना में ही तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह़ (मुफ़्ती कोर्स) में दाख़िला ले लिया। (ता दमे तह़रीर) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत तम्हीदुल ईमान (जामेअ़ मस्जिद मुस्त़फ़ा सेक्टर-1 मेट्रोवल साइट बाबुल मदीना कराची) में फ़तवा नवेसी की तरबिय्यत ह़ासिल कर रहा हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(25) सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया

सूबा सरहद (पाकिस्तान) के नादरन एरिया गिलगित के एक इस्लामी भाई अह़मदुल्लाह अ़त्तारी का बयान कुछ यूं है : मेरे बड़े भाई जो इस वक़्त शो'बए ता'लीम में ऑफ़ीसर हैं, मुझे दीनी व दुन्यवी ता'लीम दिलवाने की ग़रज़ से सितम्बर सि. 1989 ई. गिलगित से कराची ले आए। उसी साल **दा'वते इस्लामी** का सालाना बैनल अक़्वामी **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** ककरी ग्राउन्ड (बाबुल मदीना कराची) में मुन्अ़क़िद हुवा। हम भी उस में शरीक हुए। इज्तिमाअ़ की **रौनक़** और ज़िक्रो दुआ़ की **रूह़ानिय्यत** देख कर मैं बड़ा ह़ैरान हुवा कि आज तक मैं ने ऐसा बा रौनक़ इज्तिमाअ़ नहीं देखा था और न ही ज़िक्रो दुआ़ की ऐसी रूह़ानी क़ैफ़िय्यत कभी नसीब हुई थी। उस इज्तिमाअ़ में शिर्कत से पहले या'नी मेट्रिक पास करने तक सिर्फ़ नमाज़ पढ़ते वक़्त टोपी रखता था और अगर कभी नमाज़ के फ़ौरन बा'द टोपी उतारना भूल जाता और जब याद आता तो अफ़्सोस होता था कि (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) अभी तक टोपी मेरे सर पर है। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की ब-र-कत से सर पर **सब्ज़ इ़मामा शरीफ़** सज गया और ता दमे तह़रीर इस पर इस्तिक़ामत ह़ासिल है।

दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से इल्मे दीन सीखने का जज़्बा मिला। चुनान्चे मैं ने सि. 1989 ई. के अवाख़िर में कराची के एक सुन्नी दारुल उ़लूम में दाख़िला ले लिया। फिर मुख़्तलिफ़ जामिआ़त से ह़ुसूले इ़ल्म के बा'द सि. 1995 ई. के आख़िर में दौरए ह़दीस का इम्तिह़ान दे कर स-नदे फ़रागत ह़ासिल की और सि. 1996 ई. से **जामिअ़तुल मदीना**

गोधरा कोलोनी बाबुल मदीना कराची में (जो कि दावते इस्लामी का दर्से निज़ामी का पहला इदारा था) में पढ़ाने की सआ़दत ह़ासिल हुई। ता दमे तह़रीर **जामिअ़तुल मदीना** (हैदरआबाद) में तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम दे रहा हूं।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वक़्तन फ़ वक़्तन **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत भी मिलती रहती है। अपने अ़लाक़े में अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत, बा'ज़ अवक़ात मद्र-सतुल बालिग़ान (बा'दे इ़शा) पढ़ाने और कोई इस्लामी भाई दर्स देने वाला न हो तो दर्स देने वरना सुनने की सआ़दत ह़ासिल होती है। म-दनी इन्आ़मात का कार्ड भरने की भी तरकीब है। म-दनी इन्आ़मात का कार्ड भरने की ब-र-कत से सूरए मुल्क शरीफ़ की तिलावत और कई ऐसी नेकियों पर इस्तिक़ामत मिली जिन पर पहले अ़मल नहीं था।

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(26) येह ए'तिकाफ़ क्या होता है !

डेरा अल्लाह यार (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ह़बीबुल्लाह अल अ़त्तारिय्युल म-दनी के बयान का लुब्बे लुबाब है : मुझे तो न ख़ौफ़े ख़ुदा का पता था न इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का। बस गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बद मस्त रहते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहा था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करोड़ हा करोड़ एह़सान के हमारे शहर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते**

इस्लामी का म-दनी काम शुरूअ़ हुवा और पहली बार **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से (सि. 1416 हि.-1995 ई.) शबे बराअत का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा। मैं ने उस में शिर्कत की। इज्तिमाअ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** के दाढ़ी और इमामे वाले नूरानी चेहरों और उन की **महब्बत** भरी मुलाक़ातों ने मुझे **दा'वते इस्लामी** से काफ़ी मु-तअस्सिर किया। मगर मैं दूर ही दूर रहा। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी कभी शिर्कत की तौफ़ीक़ न मिली ह़त्ता कि र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1416 हि.-1995 ई.) की **सत्ताईसवीं शब** आ पहुंची, मैं ने इज्तिमाअ़ वाली मस्जिद में होने वाली **इज्तिमाई दुआ़** में ह़ाज़िरी दी, इख़्तिताम पर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात हुई और किसी ने बताया यहां कुछ इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ में बैठे हैं। मेरे लिए येह लफ़्ज़ नया था। इस लिये मैं ने तजस्सुस के साथ पूछा, **येह ए'तिकाफ़ क्या होता है ?** इस्लामी भाइयों ने बड़ी महब्बत के साथ मुझे **ए'तिकाफ़** के बारे में मा'लूमात फ़राहम करते हुए बा'ज़ **ए'तिकाफ़ की म-दनी बहारें** बयान कीं। **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में किये जाने वाले ए'तिकाफ़ के अह़वाल सुन कर मैं ने दिल में पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आइन्दा साल **ए'तिकाफ़** में ज़रूर बैठूंगा। चुनान्चे दिन गुज़रते गए और जब र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1417 हि.-1996 ई.) की फिर आमद हुई तो **आख़िरी अ़शरह** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मैं मो'तकिफ़ हो गया। दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में वोह कुछ सीखने को मिला जो बयान से बाहर है।

न पूछो हम कहां पहुंचे और इन आंखों ने क्या देखा
जहां पहुंचे वहां पहुंचे जो देखा दिल के अन्दर है

ए'तिकाफ़ में किसी ने दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने का ज़ेह्न दिया, मेरी समझ में आ गया। चुनान्चे बाबुल मदीना कराची आ कर जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, ह़त्ता कि दौरए ह़दीस के बा'द **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना) में (सि. 1425 हि.- 2004 ई.) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मेरी दस्तार बन्दी की। और ता दमे तह़रीर मैं **दा'वते इस्लामी** के एक जामिअ़तुल मदीना (ह़ैदरआबाद) में कुछ अ़र्सा तदरीस की ख़िदमात अन्जाम देने के बा'द 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर हूं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयों ! देखा आप ने ! एक ऐसा लड़का जिस को कल तक येह भी नहीं पता था कि **ए'तिकाफ़ क्या होता है !** आज वोह **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ करने की ब-र-कत से न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि "आ़लिम गर" बन गया या'नी आ़लिम बनने के बा'द **दा'वते इस्लामी** के **जामिअ़तुल मदीना** में ब ह़ैसिय्यते मुदर्रिस **दर्से निज़ामी** के अस्बाक़ पढ़ा कर दूसरों को आ़लिम बनाने वाला बन गया।

सुन्नतें सीख लो रह़मतें लूट लो म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
इ़ल्म ह़ासिल करो ब-र-कतें लूट लो म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप भी म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया ! **दा'वते इस्लामी** का **म-दनी माह़ोल** कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे, न जाने कितने लोगों को बुरे अ़क़ाइद से तौबा नसीब हुई। आप भी तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी अवसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा। जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। **आ़शिक़ाने रसूल** के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते कुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, गुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट

जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूट जाएगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मैं फ़नकार था !

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 851 पर लिखते है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! गुनाहों के दल दल में धंसे हूए एक **फ़नकार** का वाक़िआ पढ़िये जिसे दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** ने म-दनी रंग चढ़ा दिया। चुनान्चे **औरंगी** टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! मैं एक **फ़नकार** था, म्यूज़िकल प्रोग्राम्ज़ और फंकशन्ज़ करते हूए ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हूए जा रहे थे, क़ल्ब व दिमाग़ पर ग़फ़लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हूए थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एह़सास। सह़राए मदीना टॉल प्लाज़ा सुपर हाई-वे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत्ह़ पर होने वाले **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमा** (सि 1424 हि - 2003 ई.) में ह़ाज़िरी के लिये एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के तरग़ीब दिलाई। ज़हे नसीब ! उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। तीन रोज़ा इज्तिमा के इख़्तिताम पर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हूई, में अपने जज़्बात पर काबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मिल गया।

और मैं ने रक़्स व सुरूर की मह़फिलों से **तौबा** कर ली और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया।

25 दिसम्बर 2004 को मैं जब **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्राई हूई आवाज़ में उन्हों ने अपने यहां होने वाली **ना बीना बच्ची** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा, डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बंद टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। में ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िलें** में दुआ करूंगा। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी बहुत दुआएं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले **आशिक़ाने रसूल** से भी दुआएं करवाईं । जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कराता हुवा फ़ोन आया और उन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रहत असर सुनाई कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर ताअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यों कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था**। येह बयान देते वक्त اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें हासिल हैं।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र *रोशन आंखें मीलें, क़ाफ़िले में चलो*
आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर *भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि.1, स.851)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़िय्यात के तअ़ल्लुक़ से **अमीरे अहले सुन्नत**, शैख़े त़रीक़त, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 त़-लबा इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं। **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला मक-त-बतुल मदीना से मिल सकता है। रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए उस को पुर कर के म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाना होता है। अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में फ़िक्रे मदीना करना कहते हैं। आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये अगर फ़िल्ह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पच्चीस्वीं शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड के लिये उस को देख लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले को भरने का ज़ेह्न बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़्फ़िरत कर बे हि़साब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करनेवालो पर रह़मतो की कैसी बारिशे बरसती है, इस की »क ज़लक मुलाह़ज़ा हो :

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का खुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का मेरा मा'मूल है । एक बार में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की त-रबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में **आशिकाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं के रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ख़्वाब में तशरीफ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हूई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "जो म-दनी काफ़िले में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा "

शुक्रिया क्यूं कर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी खुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि.1, स.931)

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं और एक मुसल्मान के लिये उस की सब से क़ीमती शै उस का ईमान है । इस की हिफ़ाज़त की फ़िक्र हमें दुन्यावी अश्याअ से कहीं ज़ियादा होनी चाहिये । इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **आ'ला ह़ज़रत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान** علیہ الرحمۃ का इर्शाद है : उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है ।

(अल मल्फ़ूज़, हिस्सा : 4, स. 390, हामिद एन्ड कम्पनी मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत के इलावा ईमान की हिफ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी "मुर्शिदे कामिल" से बैअ़त हो जाना भी है । **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,** बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में मुरीद करते हैं और क़ादिरी सिल्सिले की अ़-ज़मत के तो क्या कहने कि इस के अ़ज़ीम पेशवा हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ियामत तक के लिये (ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ) अपने मुरीदों के तौबा पर मरने के ज़ामिन हैं । (بهجة ال اسرار، ص ۱۹۱، مطبوعة دارالكتب العلميه بيروت)

जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत मे म-दनी मश्वरा है कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **वुजूदे मस्ऊ़द को ग़नीमत जानते हुए बिला ताख़ीर इन का मुरीद**

हो जाए । यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही फ़ाएदा है ।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस बात का इज़्हार करते रहते हैं कि हम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं । मगर त़रीक़े कार मा'लूम नहीं, तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद** या **त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम एक सफ़्हे पर तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी** शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुजरात'' के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा ।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

e-mail :attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बोल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं । अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं ।

(2) एड्रेस में मह़रम या सरपरस्त का नाम ज़रूर लिखें ।

(3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं ।